तेज साप्ताहिक मनोरंजन टैक्स १.५० रुपये
अंक : ३ वर्ष : १८ १ फरवरी १९८२

दीवाना

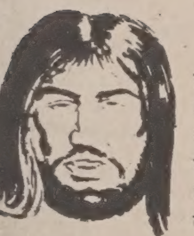




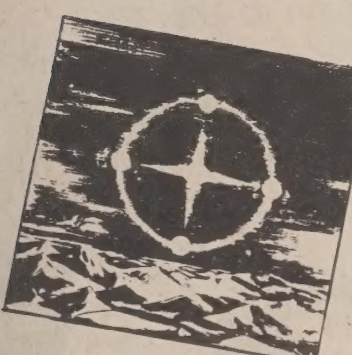
रिंकी तुम्हें पता है लेटेस्ट स्कोर क्या है?
लल्लू मैंने तुम्हें पहले भी कहा है कि मुझसे क्रिकेट की बात मत किया करो, मुझे इस गेम से नफरत है। कितना वाहियात खेल है। अगर मुझ से दोस्ती रखना है तो स्कोर-विस्कोर मत पूछा करो। आओ बैठो, मैं आज तुमसे बहुत जरूरी बात करना चाहती हूं।
मैं सीरियस बात करना चाहती हूं। इससे तुम्हारी और मेरी दोनों की जिन्दगी भर का सम्बन्ध है।
ठीक है। मैं आइसक्रीम ले आता हूं, सीरियस बात करने से पहले मुंह मीठा कर लेना चाहिए।
रिंकी किस विषय पर मुझ से बात करना चाहती होगी? जरूर शादी के बारे में हिन्ट देना चाहती है। इसके घर वाले शादी पर जोर दे रहे होंगे न। यही बात होगी प्यारे लल्लू!
और यह कपिल देव ने बल्ला घुमा कर दे मारा है, गेंद सीधी जा रही है बाउंड्री की तरफ-रोकने का सवाल ही नहीं है।
थोड़ी देर कमेंट्री सुन लूं।
और कपिल देव का यह लगातार दूसरा चौका है। उधर ईस्ट स्टैंडों में लोग छक्के की मांग कर रहे हैं, देखते हैं कपिल उनकी यह मांग पूरी करते हैं या नहीं। अंडरवुड चल दिये बालिंग रन पर……
कहां मर गया लल्लू का बच्चा? उसे आये एक घंटा हो गया! आइसक्रीम लाने क्या फैक्ट्री चला गया? मैं तो चलती हूं, भाड़ में जाये।
ऐह! रिंकी नाराज हो कर चल दी! अब वह मुझ से कभी बात नहीं करेगी। कमाल हो गया रन बनाने के लिये कपिलदेव दौड़ा था और रन आउट एक कमेंट्री सुनने वाला हो गया। हुआ है कभी पहले ऐसा?

विश्व की 18 भाषाओं में करोड़ों की संख्या में बिकने वाली प्रसिद्ध अमरीकी लेखक 'रिप्ले' की मशहूर पुस्तक

Ripley's — Believe It or Not! -अब हिन्दी में भी



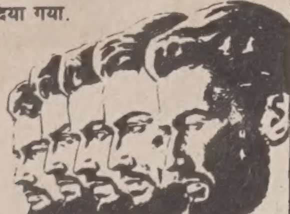
दुनिया का सबसे अनोखा भाषाविद
तरीम नामक एक भारतीय साधु, जो बद्रीनाथ के पास की एक गुफा में रहता है. केवल हिन्दी और अंग्रेजी जानता है किन्तु वह विश्व की 1000 भाषाओं में से किसी भी भाषा में पूछे गए प्रश्नों का मानसिक दूरबोधता (टेली पैथी) द्वारा उत्तर दे देता है.



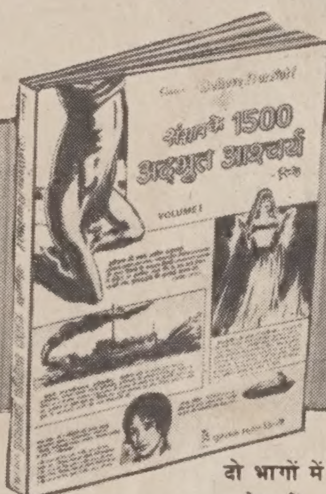
5 सूर्यों का देश
सिंग-नाइंग-चू (चीन) के निकट प्रातःकालीन कुहरे के कारण उत्पन्न दृष्टि-भ्रम से आकाश में 5 सूर्य दिखाई देते हैं.



शहर-जिसे मृत्युदण्ड दिया गया
फ्रान्स के लायआन्स शहर को राजभक्त होने के कारण फ्रान्सीसी क्रान्तिकारी न्यायालय के आदेश से पूर्ण रूप से नष्ट कर दिया गया और इसके 35000 निवासियों को फांसी पर लटका दिया गया.



इतिहास का सबसे उल्लेखनीय 'पंचक'
10वीं शताब्दी में लानपम्पमेन्ट, वेल्स में एक ही शक्ल के एक साथ जन्में 5 भाइयों में प्रत्येक नामी सन्त बना. लानपम्पमेन्ट शहर का नाम भी उस चर्च पर आधारित है जिसमें वे दफनाए गए हैं.



मूल्य
प्रत्येक भाग—15/-
दोनों भाग सम्पूर्ण —25/-
डाकखर्च—4/-

दो भागों में
प्रत्येक में
750 आश्चर्य
दूसरा भाग प्रेस में

संसार के 1500 अद्भुत आश्चर्य

VOLUME-I

जिसमें कुदरत के चमत्कार, अद्भुत ऐतिहासिक घटनाएं, बादशाहों की अजीबोगरीब सनकें, साहस और वीरता के बेमिसाल कारनामें, पृथ्वी, समुद्र और आकाश के जीव-जन्तुओं और वनस्पतियों की अनजानी विचित्रताएं वर्णित हैं।

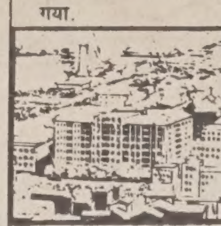
यह एक ऐसी दिलचस्प पुस्तक है

* जिसकी विचित्र कहानियां प्रत्येक घर-परिवार में, हर पार्टी व जश्न में, सभा समारोहों में हमेशा-हमेशा चर्चा का विषय बनी रहेंगी।
* जो कट-फट जाने पर भी, यदि उसका एक पृष्ठ भी कहीं पड़ा होगा, हर व्यक्ति को अपनी ओर आकर्षित करेगा और वह उसे पढ़े बिना नहीं रह सकेगा।
* जो हर प्रतीक्षा व रिसेप्शन कक्ष में आपको रखी मिलेगी जैसे :—**हर डाक्टर के क्लीनिक पर --- हर होटल के रिसेप्शन पर --- हर वकील के प्रतीक्षा कक्ष में --- हर बारबर शॉप पर और हर ऑफिस के रिसेप्शन पर**
* रेल के लम्बे और उबा देने वाले सफ़र को मनोरंजक बनाएगी।
* जो बच्चों में पढ़ने की रुचि और लगन पैदा करेगी और मनोरंजन के साथ-साथ उनका ज्ञान वर्द्धन भी करेगी।

1500 आश्चर्यों में से कुछ की झलक
■ एक गीदड़—जिसने 12 वर्ष तक मनुष्यों पर राज्य किया. ■ एक ऐसा पेड़—जो हर शाम पानी की बारिश करता है. ■ एक समुद्री जीव—जिसका वज़न बचपन में 10 पौंड प्रति घंटे बढ़ता है. ■ एक आदमी—जिसने अपनी हथेली पर पौधा उगाया. ■ एक मनुष्य—जो अपनी दोनों हथेलियों पर दो आदमियों को बिठाकर 80 फीट तक ले गया. ■ क्या कोई जीव अण्डे के अन्दर होने पर भी बोलता है? ■ एक साधु—जिसे तोप में डालकर दो बार 800 फीट ऊँचा उछाला गया, मगर फिर भी जीवित रहा. ■ एक आदमी—जिसने 80 वर्ष की उम्र में शादी करके 10 बच्चे पैदा किए. ■ ऐसी झील—जिसका पानी हर 12 साल बाद बदलकर खारी-मीठा हो जाता है.
कब?....कहां?...और कैसे? जानने के लिए पढ़िए.
संसार के 1500 अद्भुत आश्चर्य



बनमानुष द्वारा महिला का अपहरण
1914 में फ्रांस के राष्ट्रपति की पत्नी का एक बनमानुष द्वारा अपहरण कर लिया गया और उसने उन्हें एक ऊँचे पेड़ की चोटी पर कई घंटे तक अपने कब्जे में रखा, लेकिन इस घटना को 40 वर्ष से अधिक समय तक छुपाए रखा गया.



ब्राजील के एक शहर—बेलम डो पारा में—पूरे वर्ष प्रतिदिन दोपहर 2 से 4 बजे के बीच वर्षा होती है.



व्यक्ति—जो लाश द्वारा मारा गया—
पेरिस में एक पिस्तौल द्वन्द्व में एक पक्ष द्वारा सिगनल मिलने से पहले ही गोली चला देने पर प्रतिपक्षी ढेर हो गया। किन्तु जब वह उसकी लाश के ऊपर झुका तो लाश की मांसपेशियों में एक ऐसी फड़कन हुई जिससे पिस्तौल चल गयी और दूसरे की भी मृत्यु हो गयी।

अपने निकट के बुक स्टाल एवं रेलवे तथा बस अड्डों पर स्थित बुक स्टालों पर मांग करें अन्यथा वी०पी०पी० द्वारा मंगाने का पता।

पुस्तक महल, खारी बावली, दिल्ली-110006

नया शो रूम: 10-B, नेता जी सुभाष मार्ग, दरिया गंज न. दिल्ली-110002


आदिमयुग
जंगल में जानवर दिन रात ऐसी-ऐसी भयानक आवाजें निकालते रहते हैं कि आदमी का दिल दहल जाये, कान के पर्दे फटने लगते हैं। यह आवाज सुन रहे हो यह डिप्लोडोकस ओसीबी-सॉर के पूंछ पटकने की आवाज है। एक लय में पूंछ पटक-पटक कर दुश्मन को डराने की कोशिश करता है।
डमाडम की आवाज है खौफनाक!
डमाड़म
टक टक पूंSSSS
पूं पूं
यह आवाज तो मैं भी बता सकता हूं एक सांड बिट्टसॉर दूसरे सांड का पैर चटक कर और हुंकारी मार लड़ने के लिये ललकार रहा है।
हमारे इस युग में ऐसी-ऐसी आवाजों का ही बोलवाला है। आगे चल कर मानव इतिहास लिखेगा तो पता नहीं हमारे युग को किस नाम से पुकारेगा।
एक जंगली भविष्यवक्ता ने कहा है कि ए
युग आयेगा जब यह आवाजें शौक से सु
जायेंगी। तब हमारे युग को डिस्को युग के ना
से याद करेंगे।
ईईयाSSSS
इसे सुनो बीटलस अपने अंडे डायनासौर से बचाने की कोशिश कर रहा है.
चींSSSS गर्रर्रचक
गर्रर्रचक गर्रर्रचक
पित्थीकास को पालीडोरस ने दबोच लिया है। और उसे किस तरह चबा रहा है। यह गर्रर्रचक भर्रर्रचक की आवाज मांस हड्डी चबाने की है।

आपका भविष्य

पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा

मेष: आय यथार्थ, बनते कामों में अड़चन, मित्र सहयोग से थोड़ी बहुत सफलता मिल जाएगी, यात्रा छोड़ दें, वैर-विरोध से चिन्ता रहेगी, हालात संभलेंगे, रुकावटें दूर होंगी, कारोबार बढ़ेगा।

वृष: आय, व्यय से अधिक, घरेलू योजनाओं पर विचार एवं व्यय, कामधन्धा सुधरेगा पर व्यर्थ की चिन्ता बनी रहेगी, यात्रा में कष्ट या परेशानी, कोई विशेष समाचार मिलेगा, दिन ठीक नहीं, सतर्क रहें।

मिथुन: लाभ बढ़ेगा, योजनाओं में सफलता, व्यय यथार्थ, यात्रा की आशा है, अशुभ फलों में कमी आएगी, स्थायी कामधन्धों एवं नई योजनाओं पर व्यय, यात्रा सफल, लाभ अच्छा मिलेगा।

कर्क: हालात सुधरेंगे पर संघर्ष भी काफी रहेगा, कामधन्धों से लाभ होगा, शत्रु पर विजय, मेहनत से सफलता नसीब होगी, लाभ खर्च बराबर, व्यर्थ के झंझटों से परेशानी होगी, जरूरी काम बन जाएंगे।

सिंह: संघर्ष तो काफी रहेगा पर सफलता देर से मिलेगी, यात्रा न करें, चिन्ता काफी रहेगी, भाई सहयोग देंगे, शत्रु एवं बाधाओं पर विजय, कामकाज सुधरेगा, रुका पैसा मिलेगा।

कन्या: किसी खास उलझन के सुलझने से खुशी, वातावरण सुधरेगा, हालात ठीक होंगे, आय यथार्थ, यात्रा न करें, घरेलू चिन्ता बनेगी, व्यय बढ़ेगा, काम बनेंगे। यात्रा न करें तो अच्छा है।

तुला: भाग्य सहारा देगा, सफलता समय पर मिलती रहेगी, कामों में रुचि बढ़ेगी, दौड़धूप काफी रहेगी, व्यापार आगे बढ़ेगा, नई योजना पर विचार, व्यय अधिक, सुख साधनों में वृद्धि, परिश्रम काफी रहेगा,

वृश्चिक: व्यय यथार्थ, भाई से सहयोग, सफलता मिलती रहेगी, यात्रा की आशा है, लाभ खर्च समान, कोई विशेष सूचना मिलेगी, संघर्ष काफी रहेगा, व्यय अधिक, यात्रा न करें, परेशानी काफी रहेगी,

धनु: व्यय यथार्थ, लाभ देर से मिलेगा, उलझनों से परेशानी एवं घबराहट भी होगी, बिगड़े काम बनेंगे, भाग्य साथ देगा, परिश्रम से सफलता मिलेगी, संघर्ष काफी रहेगा, कोई गुप्त चिन्ता बनेगी,

मकर: घरेलू पक्ष से चिन्ता, नातेदारों से मेलजोल, लाभ बढ़ेगा, कारोबार ठीक चलेगा, यात्रा न करें, मित्र सहयोग देंगे, कोई अप्रिय समाचार या घटना संभावित है, सतर्क रहें, दिन ठीक नहीं, व्यापार से लाभ बढ़ेगा।

कुम्भ: समस्याएं तो काफी रहेंगी फिर भी काम बनते जाएंगे, लाभ बढ़ेगा कारोबार ठीक चलेगा, मनोरंजन आदि पर खर्च, सुख साधनों में वृद्धि, कारोबार भी सुधरेगा, यात्रा पर न जाएं तो अच्छा है

मीन: व्यापारिक क्षेत्र में विकास, कोई खास सूचना मिलेगी, यात्रा का विचार बनेगा, लाभ अच्छा होगा, धार्मिक कामों में रुचि एवं व्यय भी होगा, काम बनते रहेंगे परन्तु व्यर्थ के झंझटों से परेशानी बनी रहेगी।

आपके पत्र

दीवाना का अंक १ प्राप्त हुआ। मुखपृष्ठ देख कर हंसी का फव्वारा छूट पड़ा। डैनी का पोस्टर बेहद पसंद आया. 'दीवाना'' को बड़े साइज में देखकर प्रसन्नता हुई। दीवाना के फीचर लल्लू, परोपकारी, सिलबिल पिलपिल, समझो जिन्दगी अन्दाज-ए-क्रिकेट में इत्यादि पसन्द आये।

—निशा चौहान-कोरबा

नव वर्ष की शुभ कामनाओं सहित जनवरी-८२ का पहला अंक प्राप्त हुआ। मुख पृष्ठ तो बहुत ही बढ़िया था। आपने बड़ा तथा चौड़ा साईज कर दिया इसके लिए तो हर पाठक ही आपका आभारी है। 'जब हम मिनिस्टर बनें' (संजय कुमार) कहानी भी अच्छी थी। खेल-खेल में ''शीर्षस्थ टैस्ट गैदबाजों की सूची' से हम बहुत कुछ जान सके। सब कुछ मिला कर अंक बेहद अच्छा था।

गुरमीत सिंह मीता, नयी दिल्ली-४९

दीवाना का नववर्ष अंक नई प्रतिष्ठा लिये प्राप्त हुआ! मुख पृष्ठ पर चिल्ली का नववर्ष मुबारक बहुत ही अच्छा लगा। इसके अतिरिक्त लल्लू, मोटू पतलू, सिलबिल-पिलपिल, परोपकारी तथा आदिमयुग इत्यादि भी बेहद रोचक रहे। इस अंक की सबसे रोचक उपलब्धि 'समझो जिन्दगी अन्दाज ए-क्रिकेट में'' रही। इस स्तंभ को पढ़कर बहुत ही मजा आया। कृपया ''दीवाना पंचतंत्र'' फिर से आरम्भ कर दें। अगले अंक की प्रतीक्षा में—

परमजीत सिंह सुलैच
राम नगर, करनाल

दीवाना का नववर्ष अंक नये साइज में देखकर आश्चर्य हुआ, मैं समझता हूं इसमें नववर्ष अंक होते हुए सामग्री कम और कम मजेदार भी थी. कारण समझ न सका. कुल मिला कर ये अंक सामान्य से आगे न जा सका.

चाचा बातूनी की सभा में वृद्धि अच्छी लगी. इस बार ज्यादा प्रश्नों के जवाब मिले. दीवाना पोस्टर की कमी अखरी. कृपया बतायें कि ''क्यों और कैसे'' में प्रश्न का उत्तर भी क्या पाठक का ही होता है? या आपका.

आशा है अगला अंक हमेशा की तरह रुचिकर होगा. अगले अंक की प्रतीक्षा में

एस. एम. वसीम-लखनऊ-३

क्यों और कैसे में पाठक केवल प्रश्न पूछते हैं उत्तर हम देते हैं। **—सं.**

दीवाना अंक १ मिला, बेहद पसंद आया। लेकिन दीवाना अंक बड़ा अच्छा नहीं लगा, छोटा अंक बहुत सुनदर लगता है। बुरे फंसे, नामी चोर नहीं मिलने से निराशा प्राप्त हुई।

राजेन्द्र कुमार मन्डोरा
—भवानीमन्डी (राज.)

बडे अंक को सभी पाठकों ने पसन्द किया है। बुरे फंसे व नामी चोर भी आपको हंसाने के लिये मिलते रहेंगे। **—सं.**

दीवाना का अंक २१ पढ़ा। काफी रोचक एवं मनोरंजन से भरपूर लगा। मुखपृष्ठ देखकर मुस्कराये बिना रह न सके। अगर इसके थोड़े पृष्ठ बढ़ा दिये जायें तो काफी अच्छा रहेगा।

काका के कारतूस, आपस की बातें, गरीबचन्द की डाक, लल्ला की लव-स्टोरी, लल्लू, सिलबिल-पिलपिल काफी अच्छे लगे। 'चक्की का भूत' कहानी बहुत पसन्द आयी.

आशा है अगले अंक भी इसी अंक की तरह रोचक एवं मनोरंजन से भरपूर होंगे।

ललित कुमार शर्मा (राजस्थान)

मुख पृष्ठ पर

प्राय: पत्रिकाओं में छपा रहता है
भेजिये हमें सुझाव,
पाठकगणों का इस तरह से
बढ़ जाता है लगाव।
भेद तुम्हें एक बतलाते हैं
हमको करना माफ,
सुझाव तुम्हारे इस तरह से
हो जाते हैं साफ॥

अंक : ३ वर्ष : १८ १ फरवरी १९८२

सम्पादक: विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिका: मंजुल गुप्ता
उपसम्पादक: कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

वार्षिक चन्दा : ३५ रुपये
अर्द्ध वार्षिक : १८ रुपये
एक प्रति : १.५० रुपये



आपस की बातें

चचा बातूनी की कलम दवात से

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

अमरजात सिंह,, कुमार धूबीः चाचा जी, जरा बताइये चन्द्रमा पर कैसे दाग हैं ?

उ.: हम नहीं बताते. आप इस बहाने से जानना चाहते हैं कि आप की चाची की सूरत कैसी है ?

पंडित मेवलाल, ''परदेसी'' महोबा : ''दीवाना'' पागल क्यों माना जाता है ?

उ.: दीवाना कभी पागल नहीं माना जाता. दीवाने और पागल में जमीन आसमान का अंतर होता है पंडित जी. अगर यह अंतर न होता तो आज आप महोबा में और हम दिल्ली में होने की बजाये बरेली के पागल खाने में होते.

एम. पी. सेतिया, लुधियानाः अंकल जी, पत्नी की फरमाईश कब अच्छी नहीं लगती ?

उ.: जब यह एहसास होता है, कि अब वह गर्ल फ्रैंड नहीं रही.

प्रशान्त कुलकर्णी, इन्दौरः कुत्ते को लोग, वफादार व स्वामी भक्त मानते हैं फिर क्यों कुत्ते की मौत दुख व तकलीफ दायक होती है. क्या वफादार और स्वामी भक्त होने का यही इनाम है ?

उ.: प्रश्न आप का बहुत अच्छा है, पर चाचा बातूनी की बजाये यह प्रश्न आप ऊपर वाले से पूछिये जिस ने वफादारों और स्वामी भक्तों का कबाड़ा कर रखा है.

चन्द्र प्रकाश सिंह, देवरियाः मैं आप के पास अपना बाल उपन्यास भेजना चाहता हूं. उसके लिये मुझे क्या करना होगा ?

उ.: सम्पादक दीवाना के पते पर उसे रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेजिये. पसंद आने पर प्रकाशित कर दिया जायेगा. न पसंद आने पर वापसी के लिये टिकट लगा और अपना पता लिखा लिफाफा साथ भेजिये.

सुधा उपाध्याय, मिलोनीगंज जबलपुरः चाचा जी, यदि आप को सुख और दुख का एक साथ सामना करा पड़े तो आप क्या करेंगे ?

उ.: कभी रोयेंगे और कभी एक दम हंस देंगे और यह शेर गुनगुनायेंगे—रोते-रोते हंस देना, वहशत तो नहीं सौदा तो नहीं,
इस बात पे आ जाती है हंसी, किस बात का हम गम करते हैं.

योगेन्द्र बहादुर कायष्ठ, भक्तपुर, नेपालः मैं ने अपना फोटो दीवाना फ्रैंडस क्लब के लिये मार्च १९८० में भेजा था पर अब तक प्रकाशित नहीं हुआ क्यों ?

उ.: फोटो अधिक संख्या में आने के कारण देर हो जाती है. आप इसे अंधेर समझते हैं. यह अलग बात है.

मनोज अरोड़ा, झरियाः चाचा जी, दीवाना का नया अंक मिला, इस में, अगर मनुष्य घोंसले में रहता,'' बहुत पसंद आया. ''बुरे फंसे, फैशन के चक्कर में'' भी अच्छा था. क्या आप मेरे अनुरोध पर अभिताभ बच्चन का एक मुफ्त पोस्टर छापने की कृपा करेंगे।

उ.: पोस्टर छापने का सिलसिला अभी कुछ दिनों के लिये हमने बन्द कर दिया है. पर दीवाना का बदला हुआ बड़ा साईज भी पोस्टर से कम नहीं है. हम शीघ्र ही अभिताभ बच्चन की एक ट्रांस्पैरेंसी छापने की कोशिश करेंगे.

काली पद वशु, बरकाकानाः मनुष्य को अपनी मृत्यु तिथि मालूम हो जाये तो क्या होगा ?

उ.: उसके जो दिन बचे होंगे वे भी मरे बराबर हो जायेंगे.

वेद प्रकाश अमित, घौण्डा, दिल्लीः चाचा जी, आपकी उठी हुई उंगली का क्या अर्थ है ?

उ.: कृपया हमें अपने कनस्तर में से सीधी उंगली से घी निकालने दीजिये.

केवल प्रकाश दुआ, काशीपुरः मुसीबत के समय अगर कोई साथ न दे तो क्या करना चाहिये ?

उ. यह शेर गुनगुना चाहियेः
घर से चले थे हम तो खुशी की तलाश में,
गम राह में खड़े थे वही साथ हो लिये.

उपकार सिंह कमरा, मुक्तसरः आखिर लोग तड़प को मुहब्बत का नाम क्यों देते हैं ?

उ. : क्योंकि जब से दुनियां बनी है मुहब्बत को तड़प के नाम से जाना पहचाना जा रहा है. इसके लिये एक शेर अर्ज हैः
इश्क कहते हैं जिसे सब वो यही है शायद,
खुद-बा-खुद दिल में जो एक आग सी लग जाती है.

सुरेश खुराना, 'पप्पी'' जींदः पुरानी यादों को भुलाने का कोई आसान तरीका बताइये ?

उ.: कोई नई मुसीबत मोल ले लीजिये.

मो. एजाज उद्दीन आजाद, पटनाः प्रिय चाचा जी क्या कोई ऐसा राज्य है, जहां एक भी अनपढ़ नहीं ?

उ.: जी नहीं, हां आस्ट्रेलिया के बीचोंबीच आज भी घने जंगलों में ऐसे लोग हैं जिन में कोई भी पढ़ा लिखा नहीं. वे पत्थर और धातु के युग की तरह पेड़ों पर रहते हैं. उन में से किसी ने कपड़े की शक्ल तक नहीं देखी हमारा आज का कलचर उन्हें छू तक नहीं गया.

मुकुल कुमार सक्सेना, नई दिल्लीः चाचा जी, आजकल लड़ाई का खतरा बढ़ता जा रहा है. यदि कभी देश पर बाहरी आक्रमण हुआ, तो क्या आप सेना में भर्ती हो कर देश की रक्षा करेंगे ?

उ.: जरूर करेंगे. दुश्मन के इस प्रश्न का उत्तर देना भी हमारा फर्ज है.

रवि भाटिया, शंकर रोड़ मार्किटः किसी की याद सताये तो ?

उ.: आप उसे बुरी तरह याद करके इतना सताइये कि उसकी हिचकियां बन्द न हों और इस शेर का मतलब समझ आ जाये.
मुझे याद करने से यह मुद्दआ था,
निकल जाये जां हिचकियां आते-आते.

परमानन्द चावला, कामलीः हमेशा खुश रहने के लिये क्या करना चाहिये ?

उ.: गमों की खाट खड़ी करने वाला दीवाना लगातार पढ़ते रहना चाहिये.

जगतसिंह विष्ठ, भिकियासेंन, अलमोड़ाः चाचा जी, पाकिस्तान को अमरीकी हथियारों की सप्लाई के बारे में आप के क्या विचार हैं ?

उ.: अमरीका फिर उस बन्दर के हाथ में उस्तरा दे रहा है जो इस से कई बार अपनी नाक काट चुका है.

लाल बाबू गुप्ता-मीना गुप्ता, रांचीः दुनिया में सबसे अधिक पैसे ही को क्यों महत्व दिया जाता है ?

उ.: क्योंकि पैसा बहुत अधिक हो तो आदमी का कबाड़ा कर देता है और बिलकुल न हो तो आदमी को कबाड़ी बना देता है.

सुधा उपाध्याय, मिनोनीगंज, जबलपुरः चाचा जी, कर्ज और फर्ज दोनों ही को लोग क्यों भूल जाते हैं ?

उ.: क्योंकि लोगों का जीवन इस शेर की जीती जागती तस्वीर बनता जा रहा है.
ले कर दिया कमा कर खाया,
समझो जीवन व्यर्थ गंवाया.

आपस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

रिश्वत रानी

सलीम शहजाद

मेरी पहली-पहली नियुक्ति निर्माण विभाग में क्लर्क के पद पर हुई थी. सचमुच उस दिन मुझे इतनी खुशी हुई, जितनी अपने पैदा होने पर भी न हुई होगी. इसका कारण साफ था. इस विभाग में 'ऊपरी तौर पर' खाने पीने की खूब लंबी चौड़ी गुंजाइशें थीं. जी हां, मैं उसी ऊपरी चीज़ की बात कर रहा हूं जिसके लिए काका हाथरसी ने अनेकों नाम गिनाऐ हैं—घूस, रिश्वतरानी, पगड़ी, भेंट, उपहार, बख्शीश, नज़राना, इनाम आदि आदि !' यूं तो मेरी तन्खाह सिर्फ तीन सौ रुपये रखी गई थी, मगर यह तो हाथी के ऊपरी दांत थे. अन्दर तो कुछ और ही खेल होने जा रहा था.

नौकरी लगते ही मैंने अब्बा हजूर को प्यार भरा अल्टीमेटम दिया, ''ऐ अब्बाजान ! अब आपका बेटा वाकई किसी लायक हो गया है और आपसे भी 'तगड़ी' पोस्ट पर मातहत है. आप भले ही नौ सौ रुपयों की पोस्ट से रिटायर हुऐ हों, मगर आज तक खस्ताहाली के कारण मकान पर पलस्तर नहीं करवा पाये। अब जरा बुढ़ापे में चैन से बैठिए, और अपने बेटे का जादू देखिये कि किस तरह तीन सौ रुपयों की तन्खाह में, न सिर्फ मकान का पलस्तर हो पाएगा, बल्कि मकान के ऊपर—उसके भी ऊपर नया मकान बनेगा. आप अपने क्लर्क बेटे की इम्पाला कार में बैठकर शाम को ठाठ से समंदर के किनारे जाया करेंगे. आपका और अम्मी का नया दांतों का सैट बनेगा, और आप वैसे ही साबुत बादाम और अखरोट खाया करेंगे, जैसे जवानी के दिनों में खाया करते थे.''

सुनकर अब्बाजान ने गुस्से से बिफर कर कहा, ''क्या कहा, तुम रिश्वत लोगे ! देखो मियां, मैं रिश्वत की कमाई से बेहतर, सूखी रोटी खाना पसंद करता हूं.''

मैंने भी उन्हें वार्निंग दे दी, ''देखिए अब्बा हजूर, भले ही आप बीसवीं सदी की इस महान खोज 'रिश्वत' से चिढ़ते हैं. मगर मैं एक समझदार और नए ख्यालात का आदमी हूं. आपको इस घर में बचा हुआ वक्त गुजारना है तो घूंस की मक्खन-डबलरोटी खानी पड़ेगी, वर्ना मुझे कोई ऐतराज नहीं होगा जो आप जन्नत की तरफ आराम से कूंच फरमाऐं ! हां तो अम्मीजान, आप तो मेरे साथ मक्खन-डबलरोटी खाऐंगी न?''

अम्मीजान समझदार थीं. वह बोलीं, ''बेटा, सिर्फ डबलरोटी ही चलेगी. बुढ़ापे में मक्खन निगलने में तकलीफ होगी.''

यह उनका गोलमोल जवाब था और मैं ''प्यारी अम्मीजान'' कह कर उनके गले से लिपट गया. अब्बा अब गुस्से से मेरे साथ-साथ अम्मी को भी घूर रहे थे.

खुदा-खुदा करके नौकरी का वह पहला मुबारक दिन आया, जिसकी तलाश में हम अठाईस बरस से मजनूं की तरह फिर रहे थे. हमारे 'ओवर-ऐज' होने में सिर्फ सतरह घंटे बाकी थे क्योंकि इस देश में अठाईस साल के बाद बेरोजगारों को भंगी की नौकरी भी नहीं मिलती. बस अल्लाह ने कुछ ऐसी लाज रख ली थी जो ऐन किनारे पर डूबते हुऐ मांझी को तिनका नहीं, पूरा लट्ठा पकड़ा दिया था. यानि हमारी मन पसंद नौकरी, निर्माण विभाग में !

पहले ही दिन से, मैं ऑफिस में अपनी कुर्सी पर फाईलों का ढेर उलट-पुलट करने में लग गया कि किस-किस ठेकेदार से कितनी-कितनी बोरी भर के नोट वसूल किए जा सकते हैं, किस दुकानदार की गरदन नापी जा सकती है और किस मकान वाले की नसें दाबी जा सकती हैं.

मेरी तंद्रा तब टूटी, जब एक लाला जैसे दिखने वाले आदमी ने मेज़ थपथपा कर कहा, ''ऐ भाया, सो रहा है क्या?''

मैंने उसेऊपर से नीचे तक देखा. आदमी था क्या, बॉलीबाल हो रहा था. मैंने पूछा, ''आपकी तारीफ?''

—''अजी, पहले तुम अपनी तारीफ करो.''

—''मैं आज ही यहां नया क्लर्क नियुक्त हुआ हूं. और आप?

—''मैं खीरालाल जीरालाल फर्म का पार्टनर हूं. म्हारे मकानों के एक केस की फाईल थारे पास है.''

मेरी बांछें खिल गईं. मैं समझ गया कि मेरे कैरिअर की शानदार शुरुआत हो रही है. मैंने फुर्ती से रामू को आवाज देकर कहा, 'दो कॉफी लाना.'' फिर उस लक्ष्मी-सुत से शब्दों में शहद घोलते हुए मैंने कहा, ''आप खड़े क्यों है? बैठिए न?''

गहरी सांस लेकर वे बोले, ''यही तो अफसोस है भाया, बैठने की मनाही है. मोटापा है और ....! बैठ गया, तो थारे को चार चपरासी बुलने पड़ेंगे।''

—''अच्छा कहिए, मैं आपकी क्या खिदमत कर सकता हूं'' मैने जितनी हो सकती थी, अपनी बत्तीसी चीरते हुए कहा. मैं अच्छी तरह समझ गया था कि अगर मैं ने सही परफोरमेंस दिखाई, तो इस लाला के बच्चे से काफी मोटी रकम वसूल की जा सकती है.

अब तक कॉफी आ चुकी थी. लाला जी ने कॉफी की चुस्की लेते हुए कहा, '' हां तो भाया, छोटा सा काम है. इस फाईल पर साईन कराने हैं.''

मैं समझ गया कि अब लोहे पर चोट करने का वक्त आ गया है. मैने ना नुकुर करते हुए कहा, ''देखिए खीरालालजी, यह मामला ज़रा नाजुक है. आपने मकानों में सीमेंट सैम्पल के मुताबिक नहीं मिलाई है. ऐसे में साईन करना जरा मुश्किल......''

पर उन्होंने मेरा वाक्य पूरा होने से पूर्व ही तड़ से एक पांच का नोट निकाल कर मेरी टेबिल पर रख दिया.

मुझे चक्कर आने लगे. मैं ने गुस्से से तमक कर कहा, ''यह क्या है?''

उन्होंने शांत भाव से कहा ''पांच का नोट है.''

''वो तो मुझे भी दीख रहा है कि पांच का नोट है, पांच हजार का नहीं. मगर आपने मेरी टेबिल पर क्यों रखा है?''

''तो और क्या मनीआर्डर से भेजूं?'' वे भी भमक उठे, ''देख भाया, ये पांच रुपये चुपचाप रख ले. किसी को पता भी नहीं चलेगा.''

मुझे सस्ता जान कर, लाला पांच रुपये में यूं टाल रहे थे जैसे बच्चे को लाली पाप देते हैं. मैं ने उन्हें प्यार से समझाया, ''देखिये लालाजी. आपका काम इतने रिस्क का है और आप मजाक करने पर तुले हुऐ हैं.'' फिर कुछ नर्म पड़ते हुऐ मैं ने कहा, ''अच्छा चलिये, बात दो हजार पर तय हो जाए.''

—''दो हजार?'' सुनकर लाला जी सट से उछल पड़े, ''ओ भाया, क्या बावले कुत्ते ने काटा है? मैं फिर कह रहा हूं कि तू यहां नया आया है. अपने चार साथियों से पूछकर बात कर. पांच रुपये रिश्वत चाहिए तो ले, वरना मैं चलता हूं.'' उन्होंने 'रिश्वत' शब्द कुछ इस तेज़ी से कहा, कि आस पड़ोस के कमरों तक से मेरे क्लर्क साथी उठकर पास आ गए. मेरी सिट्टी-पिट्टी गुम हो

शेष पृष्ठ २१ पर

मोटू पतलू काल चक्र में

पिछले दिनों चार लाख साल आगे के युग का एक वैज्ञानिक टाईम मशीन लेकर हमारे युग में आ गया था और मोटू-पतलू को डाक्टर झटका, घसीटा राम, चेला राम जूडो मास्टर और अकलमन्द उल्लू समेत दो लाख दस हजार साल आगे के युग में ले गया था.

उस युग में किसी दूसरे उपग्रह से आये बन्दरों और धरती पर रहने वालों में युद्ध चल रहा था. बन्दरों के अंतरिक्ष यान धरती वालों के वैज्ञानिक ठिकाने नष्ट कर रहे थे और धरती वाले बन्दरों को पकड़ कर उन्हें अपने इलैक्ट्रानिक परीक्षणों के बीच मार रहे थे. टाईम मशीन का वैज्ञानिक बन्दरों के चंगुल में फंस गया था और घसीटा राम जूडो मास्टर और पतलू धरती के वैज्ञानिकों की कैद में पहुंच गये थे.

इस लड़ाई झगड़े के अंत में बन्दरों का पलड़ा भारी हो गया था उन्होंने जेल के दरवाजे तोड़ दिये थे और अपने उपग्रह से भारी सेना ला कर पूरी धरती पर अपना कब्जा कर लिया था.

जेल टूटने के बाद मोटू पतलू और उनके सभी साथी टाईम मशीन की ओर भाग लिये. चेला राम ने लाखों साल आगे के युग से आये वैज्ञानिक से टाईम मशीन चलानी सीख ली थी. बन्दरों के चंगुल में फंसे टाईम मशीन के वैज्ञानिक की चिंता किये बिना चेला राम ने टाईम मशीन चालू कर दी और टाईम मशीन ने फिर समय के धारे में अपना सफर शुरु कर दिया. अब महीने, साल और शताब्दियां ताश के पत्तों की तरह बदल रही थीं और धरती सूरज के चारों तरफ लट्टू की तरह घूम रही थी. इसी तरह समय के धारे में बहुत लम्बा सफर तै करने बाद चेला राम ने टाईम मशीन रोकी तो उसे पता चला अपने युग में दो लाख दस हजार साल पीछे जाने की बजाये वह गलती से और आगे जाने का स्विच दबा गया है. अब मशीन का मीटर बता रहा था कि वह अब सन ३०२९८२ में पहुंच गये थे.

चेला राम ने फिर पीछे के समय में जाने के लिये टाईम मशीन चलाने की कोशिश की तो स्टार्ट नहीं हुई. उस ने अनुमान लगाया कि शायद एक बार समय में सफर करने के बाद टाईम मशीन को आराम की जरूरत है.

अब मोटू-पतलू और उनके सभी साथियों को मज़बूरन टाईम मशीन से बाहर निकलना पड़ा. इस प्रकार अब वे किस युग में पहुंच गये हैं इसका आखों देखा हाल आगे देखिये.




ऐसा भी तो हो सकता है, जिसे तुम मुसीबत भरा युग समझ रहे हो वह हमारे लिये खजानों से भरा युग साबित हो.
क्या उल्लुओं की सी बातें कर रहे हो. मुझे डर है, खजाने की बजाये कोई तुम्हारी मूछें उखाड़ कर तुम्हारे हाथ में न दे दे.
अरे वह देखो, कोई चलता-फिरता जासूसी कैमरा हमारी फोटो खीच रहा है
उन का अंदाजा सही था. वह आटोमैटिक कैमरा उन की फोटो खींच कर खाल खींचने वालों तक पहुंचा रहा था.
कौन हैं यह घुसपैठिये ?
लगता है दुश्मनों के जासूस हैं. इन्हें बेहोशी के करंट से अधमरा कर दो.
अरे भागो इधर-उधर.
एक भी बच कर भागने न पाये,
भाग रहे हैं, जल्दी काबू करो इन्हें.
भागने कहां दूंगा मैं इन्हें. ए . . .वह आ गया एक रेंज में
आह!
एक का हो गया कबाड़ा.



वह एक और आ गया रेंज में
मारो करंट का झटका
क्या मुसीबत है, चलता-फिरता कैमरा मेरे पीछे ही पड़ गया है
आह!
क्यों बे करेले की दुम किस खेत की पैदावार है तू?
इसकी खाल में भुस भर दो. यह जासूस है दुश्मनों का.
इस दौड़धूप में केवल मोटू, डाक्टर झटका और जूडो मास्टर ही अपनी जान बचा सके. वे जासूस कैमरे से आंख बचा कर खतरे से दूर निकल आये थे।
पतलू, घसीटा राम और चेला राम पकड़े जाने पर उन अजीब आदमियों की अदालत में ले जाये गये.
कौन हो तुम? यहां किस लिये आये हो?



खतरे में फंसा होने पर भी उसकी बात पर पतलू को ताव आ गया.
यहां इस लिये आये हैं.
पतलू की इस हरकत पर घसीटा राम के दिमाग में अपनी जान बचाने के लिये मिलियन डालर का आईडिया आ गया.
और उसने आव देखा न ना ताव पतलू के जबाड़े पर एक जोरदार घूंसा रसीद कर दिया.
बड़े अफसरों पर हाथ उठाता है बेशरम.
तेरी यह मजाल.
घूंसे का जबाव घूंसे से दिया.
अरे यह तो हमारा दोस्त निकला. इसे अपनी फौज में भरती कर लो.
पर यह तो धरती का रहने वाला है.
यहां पर हर प्राणी हमारे उपग्रह का दुश्मन है.
नहीं यह हमारा मित्र है
तेरा नाम क्या है मुर्गी के चूजे ?
घसीटा राम.
घसीटू राम ! बड़ा प्यारा नाम है.
और इन दोनों को पत्थर तोड़ने के काम पर लगा दो. जासूसी करने के अपराध में इन्हें बाद में चक्की में पिसवा देंगे.
ले जाओ !!!
चलो कम्बखतों दूसरे कैदियों के साथ तुम भी यहां पत्थर तोड़ो.
तुम्हें चक्की में पिसवाने की तारीख मैं तय करूंगा.



किस चालाकी से अपना उल्लू सीधा कर लिया.
सांप के काटे का इलाज है, पर घसीटा राम के काटे का इलाज नहीं.
घसीटू राम इन जासूसों पर कड़ी नज़र रखे हुये है.
ए, कोई गड़बड़ की तो गोली मार दूंगा.
तभी तो कहता हूं. इसे और बड़ा अफ़सर बना दो. यह वफादार रहा तो हम इसे अपने मंगल ग्रह पर शासन सम्भालने के लिये वहां भेज देंगे.
काम क्यों रोक दिया.
अरे हराम खोरो तुम्हारे हाथ टूट गये हैं क्या ?
कभी मौका मिले तो एक कुदाल इसके सर में दे मारना.
यह इस हद तक चारसौबीस बन जायेगा; इसकी उम्मीद नहीं थी.
उधर मोटू, डाक्टर झटका और जूडो मास्टर जान बचाते एक तहखाने में पहुंच गये थे.
वहां से आगे बढ़ते वे फिर एक खाली जगह पर पहुंचे
यह पता नहीं कौन लोग हैं.?
कोई भी हो. हमारी खाल में भुस भरने वाले ही होंगे.



यह किस मशीन का दरवाजा है?
किसी का भी हो. जान बचानी है तो इन लोगों के जाने तक यहां छुप जाओ. और दरवाजा बन्द कर लो
हमारा अंतरिक्ष यान बिल्कुल तैयार है. इसके पूरा होने तक मंगल ग्रह वालों को हमारी गुप्त प्रयोगशाला का पता नहीं लगा.
शुक्र है
सारी धरती पर इस समय मंगल ग्रह वालों का अधिकार है. उन्होंने हमारे सारे वैज्ञानिक मार डाले हैं. अंतरिक्ष परीक्षण, अंतरिक्ष केंद्रों
...को नष्ट कर दिया है. मुश्किल से हम यह जमीनदोज़ अंतरिक्ष केन्द्र बचा पाये हैं.
इसका भी उन्हें पता चल जाता तो धरती के वासियों की कहानी सदा के लिये समाप्त हो जाती.
हम दोनों अंतरिक्ष यान ले कर चलेंगे. हमारे आकाश में उठते ही मंगल ग्रह वालों को हमारे इस गुप्त केन्द्र का पता चल जायेगा. इस से पहले ही अपने सभी साथियों को सुरंग के रास्ते दूसरे गुप्त स्थान पर भेज दो.
ठीक कह रहे हो
अब देर न करो
चलो अब यान को उड़ान के लिये सैट करो.
अरे मोटू, जो दरवाजा बन्द किया था वह अब खुल नहीं रहा है.
वह दरवाजा ऐसे ही था?
हां!


घसीटा राम, चेला राम और पतलू पता नहीं किस मुसीबत में फंसे हैं.
अपनी बात करो, लगता है हम उनसे भी बड़ी मुसीबत में फंसे हैं.
अच्छा साथियों. हम चलते हैं. स्पेस शिप ब्लास्ट होने से पहले सुरंग में जा कर उसका दरवाजा अंदर से बन्द करलो और दूसरी ओर सुरक्षित स्थान पर पहुंच जाओ.
यस हीरो! ९—८—७—६—५—४—३—२—...
.........ब्लास्ट !
और पलक झपकते ही उन का यान अंतरिक्ष की ओर चल दिया
और मंगल ग्रह वालों के मोनिटर ने तुरंत ही उस की सूच दे
यह अंतरि यान क से उठा हमारी आखों धूल झोंक
ब्लास्ट !
मंगल ग्रह पर पहुंच कर इनके ठिकानों और उर्जा के भंडा को नष्ट करके ही हम इन्हें धरती से भगा सकते हैं.
पीछे कौन है?
आगे क्या हुआ? पतलू, चेला राम और घसीटा राम क्या बना? मोटू, डाक्टर झटका और जूडो मास्टर पर बीती? मंगल ग्रह के दिल हिला देने वाले हंगामे कित भयंकर सिद्ध हुये. यह आगामी अंकों में देखिये.

दीवाना कार्ड मोड़कर देखिये

दोनों तीरों को आपस में मिलाइये

पाकिस्तान भारी मात्रा में हथियार इकट्ठे कर रहा है तो क्या वह भारत से लड़ना चाहेगा ?



इसके इलावा इसलामिक कानूनों के अंतर्गत नग्नता पर पाबन्दी लगी है। फिल्मी संगीत पर रोक है। टी.वी. पर से महिलायें गायब हैं। खेल के क्षेत्र में भी लड़कियों के शरीर ढकने का आदेश कि हवा तक न लगे। विज्ञापनों में भी मॉडल के शरीर का गले से नीचे का कोई अंग नजर नहीं आता।

पाकिस्तान भारत से लड़ाई मोल नहीं लेगा क्योंकि जिया यह देख नहीं सकेगा। पृष्ठ मोड़ कर आप तो देखें।

रहस्यमयी चांदी की मकड़ी

ले॰ प्रेतनाथ

प्रिंस पॉल का घेटा

पत्थर की सीढ़ियां बहुत ऊंची-ऊंची थीं, श्याम के लिये हर सीढ़ी एक कठिनाई पैदा कर रही थी, उसकी परेशानी को देख कर राजू ने श्याम को कम्बल के रस्से का एक सिरा सहारे के लिए थमा दिया.

'इसे पकड़ कर चढ़ो' वह बोला, 'मैं तुम्हारी कुछ मदद करूंगा.' रस्सा पकड़ कर रुडी के पीछे-पीछे चढ़ने में श्याम को कुछ आसानी मालूम हुई. वह एक सीढ़ी पूरी चढ़ने के बाद दूसरी भी चढ़ गये, क्योंकि अभी तक सिपाहियों को इनका पता न लग सका था. तीसरी सीढ़ी के सिरे पर सीढ़ियों को बन्द करने के लिये एक भारी दरवाजा लगा हुआ मिला. धक्का देने पर आवाज़ करता हुआ यह दरवाजा खुल गया. जब यह लोग बाहर निकल गये तो रुडी ने दरवाजा बन्द कर उसका भारी कुंडा लगा दिया.

'यह पीछा करने वालों को रोकने का काम करेगा, वह बोला, प्राचीन काल में चर्च पर भी सिपाही हमला कर देते थे, ऐसे समय पर पादरी घंटे वाले गुम्बद में शरण लेते थे और इन दरवाज़ों को बन्द कर लेते थे. आगे ऐसे दो दरवाजे और लगे हैं.

इन लोगों ने दूसरे दरवाजे को बन्द किया ही था कि सिपाही घंटे वाले गुम्बद के नीचे भारी संख्या में आ पहुंचे. उन्होंने ऊपर इन भगोड़ों को देखा और तुरन्त सीढ़ियाँ चढ़ने लगे. परन्तु पहले बन्द दरवाजे पर उन्हें रुकना पड़ा. उन्होंने दरवाजे को खूब ही हिलाया परन्तु उस पर हिलाने का कोई प्रभाव नहीं हुआ और फलस्वरूप कुंडे को काटने के लिए औजार लाने के आदेश सुनाई देने लगे.

'वे लोग जल्दी अन्दर नहीं आ पायेंगे,' राजू बोला. हमें थोड़ा सा समय तो और मिल ही जायेगा. अब यह लोग सेंट डोमिनिक के गुम्बद के ऊपर थे. नीचे सड़क पर चलती मोटरें और व्यक्ति यहां से छोटे-छोटे दिखाई दे रहे थे, सब काम सामान्य रूप से चल रहा था, गड़बड़ केवल इस घंटे की मीनार में ही हो रही थी. यहां युद्ध था. जिसमें इन्हें शत्रु को अपनी बुद्धिमत्ता से हराना था.

अब यह लोग घंटे के खुले कमरे में पहुंच गये थे यहां प्रिंस पॉल का घंटा. नुकीली छत में लगे भारी लकड़ी की बल्लियों से लटक रहा था. यहीं तीसरा दरवाजा लगा हुआ था. उसे इन्होंने बन्द किया और रुडी ने उसका भी कुंडा लगा दिया. छत के किनारे पर आराम करते कुछ कबूतर शोर से डर कर उड़ गये.

लड़के सांस लेने को रुके, नीचे सिपाही पहले दरवाजे को तोड़ने के प्रयास में हो हल्ला कर रहे थे परन्तु कुछ कामयाब होते दिखाई नहीं दे रहे थे.

जल्दी ही यह लोग किसी मिस्त्री को बुलायेंगे, रुडी ने अनुमान लगाया. 'हमें अपना काम शुरू कर देना चाहिए, देखते हैं हम इस घंटे को बजा सकते हैं या नहीं. सबसे पहले घंटे का रस्सा खींचते हैं कहीं इन्हें रस्सा नीचे बांध देने का ध्यान न आ जाये.

घंटे के कमरे के फर्श में रस्से के लिये एक बड़ा छेद बना हुआ था. रुडी ने यहां से राजू और श्याम की सहायता से रस्सा खींचना आरम्भ किया. रस्से का बड़ा भाग सॉप की कुंडली से ढेर बन रहा था. रस्से को लटकते देख कर नीचे खड़े सिपाही जोर जोर से चिल्लाने लगे, परन्तु रस्सा पकड़ पाने के लिये अब देर हो चुकी थी.

रस्से को सुरक्षित ऊपर खींच लेने के पश्चात् लड़के घंटे के निरीक्षण में लग गये. घंटा देखने में बहुत ही विशाल था और उसके किनारों पर लेटिन भाषा में कुछ लिखा हुआ था. घंटे का रस्सा दूसरी ओर लगे एक पहिये के ऊपर से एक ओर आ रहा था पहिया घुमाने से घंटा स्वयं हिल कर बजाने वाले से टकराता था. यह देख कर लड़के कुछ चकराये क्योंकि इन्होंने तो छोटे-छोटे ऐसे ही घंटे देखे थे जिनमें बजाने वाले को हिला कर ही घंटा बजाया जाता था. 'वाह!' श्याम हैरत से, घंटे को बजायेंगे, कैसे?'

'इसके बजाने के सामान्य तरीके से तो हम इसे यहां ऊपर खड़े हो कर नहीं ब पायेंगे,' राजू ने सोचते हुए कहा 'हमें को झुका कर इसके बजाने वाले को खी कर घंटे से टकराना होगा. मेरे ख्याल ऐसे घंटे को बजाया जा सकता है.

चारों लड़कों ने मिल कर घंटे के र को थाम लिया. राजू के इशारा करते सबने एक साथ रस्से को खींचा. धीरे-ध पहिया घूमा और भारी घंटा टेढ़ा होने ल कुछ ही देर में घंटा किनारे से लटक रहा और बजाने वाला लट्टू उससे कुछ ही की दूरी पर था. रूडी ने घंटे के रस्से कमरे में लगे एक खम्बे से बांध दिया. घ अब अजीब से स्थान पर लटक रहा **लड़के कुछ क्षण विश्राम को रुको.**

सूर्य उदय हो रहा था और प्रातः क की ताजी ठंडी हवा घंटे के खुले कमरे आ रही थी, कबूतर कमरे में चारों ओर कर दुबारा अपने स्थान पर बैठ कर शार रहे थे.

'क्या समय हुआ है?' राजू ने और रुडी ने अपनी घड़ी की ओर देख

'आठ बजने में बीस मिनट,' वह बो 'प्रधानमंत्री के भाषण होने में केवल मिनट का समय बाकी है. हमें जल्दी क चाहिये !''

'शुक्र है, कम्बल का रस्सा अभी हमारे पास है.' रस्सा हमें घंटा बजाने व लट्टू पर बांधना है ताकि उसे हिला कर बजाया जा सके.

एक मिनट के भीतर रस्से का फंदा कर घंटे के लट्टू पर बांध दिया, जब र मज़बूती से बंध गया था, लड़कों में अधि हट्टे कट्टे रुडी और माहिन्दर ने पीछे हट रस्सा खींचा. लट्टू हिला और घंटे से टकराया.

एक गहरा कर्ण भेदी घंटे का स्वर उत् हुआ. नीचे झांकते हुए श्याम ने देखा, बड़े लोगों ने तुरन्त अचम्भे से ऊपर देख आरम्भ किया. उसके स्वर से तो हमारे ही फट जायेंगे, काश कोनों में ठूंसने को होती, राजू बोला 'माहिन्दर और श्य रुमाल है तुम्हारे पास?

लड़कों ने अति शीघ्रता से अपने रु निकाले और उन्हें छोटे टुकड़ों में फाड़ लि टुकड़ों की गोलियां बना कर उन्होंने सब कानों में ठूंस दी और फिर वे प्रिंस के प्राचीन घंटे को बजाने में जुटे माहिन्दर और रुडी ने ही अधिकाश किया. घंटे के लट्टू को खींचकर घंटे टकराने से घंटे का ऐसा स्वर पैदा हुआ शायद उसे साधारण तरीके से बजाने उत्पन्न नहीं हो पाता. वे एक मिनट रुके फिर घंटे का नाद सुनाई दिया. इसका

ती

ना तेज था, कि लगता था सारे तरानियां
इसे सुना जा रहा होगा. घंटे का असा-
रण स्वर चेतावनी देता प्रतीत हो रहा था.
ता था. इसके स्वर से खतरा-खतरा सुनाई
रहा है.

अब उन्हें नीचे के सिपाहियों की आवाज़ें
ाई नहीं दे रही थीं, कानों को बन्द करने
बावजूद इनके कान घंटे के स्वर से बहरे
जा रहे थे. परन्तु फिर भी श्याम कमरे में
दरार से नीचे देख रहा था.

सड़कों पर भीड़ जमा होती जा रही थी,
क्षण भीड़ में और लोग आ कर मिल रहे
सबकी निगाहें खतरे की चेतावनी देते घंटे
ओर उठी हुई थीं. क्या उन्हें प्रिंस जोरो
खतरे में होने को संदेश मिलेगा?'

राजू भी आकर श्याम के नजदीक ही बैठ
ा उसने एक ओर भीड़ में होती गड़बड़
और इशारा किया। कुछ व्यक्ति चिल्ला-
ल्ला कर महल की ओर संकेत कर रहे थे
र कुछ कर रहे थे। भीड़ कुछ हिलती सी
ीत हुई ऐसा लगा एक नदी महल की
र बहने लगी हो। महल के पहरेदार भीड़
रोकने के लिये आगे बढ़ने का प्रयास
र रहे थे परन्तु उन्हें एक तरफ को धकेला
रहा था। भीड़ बढ़ती ही जा रही था और
ाथ-साथ महल की ओर बढ़ रही थी।

ऐसा लगता था सहायता का संदेश उन्हें
ल चुका था।

अचानक घंटा बजना बन्द हो गया, महि-
दर और रुडी भी नीचे का नजारा देखने आ
ये थे, रुड़ी के हाथ में उसका ट्रांजिस्टर
डियो भी था, उसे उसने चला रक्खा था,
रन्तु उसमें कोई आवाज नहीं आ रही थी।
फेर लड़कों को अपने कानों में ठूंसे कपड़े
ा ध्यान आया और उन्होंने अपने कानों से
पड़े को बाहर निकाल फेंका।

ट्रांजिस्टर पर एक पतली तीखी आवाज
सुनाई दे रही थी। रुडी ने लड़कों को उसका
अनुवाद बतलाया।

''यह प्रधान मंत्री है, यह कह रहे हैं कि
तरानिया के विरुद्ध एक भीषण षडयंत्र पकड़ा
गया है, राज्यभिषेक अनिश्चितकाल के लिये
स्थगित किया गया है। डयूक स्टीफन राज्य
की बागडोर अपने हाथ में ले रहे हैं, राज्य
के विरुद्ध षडयन्त्र करने वालों को सख्त सजा
दी जायेगी (अर्थात् तुम लोगों को) प्रिंस
जोरो को सुरक्षित रक्खा गया है. उनकी जनता
से अपील है कि देश में कानून और सुरक्षा
बनाये रक्खें।''

'यह तो बहुत ही बुरा मालूम पड़ रहा
है,' श्याम बोला 'सुनने से यह कथन

पूरा झूठा।

'परन्तु इसे कोई सुन नहीं रहा,' खुश होते हुए रुडी बोला।

''शहर के हर व्यक्ति को घंटे की आवाज सुनाई दे गई और घंटा क्यों बजा है? पता लगाने सब सड़कों पर आ पहुंचे हैं। जरा भीड़ की ओर ध्यान दो और देखो इनमें से बहुत तो महल की ओर ही चल पड़े, काश! हम देख सकते वहां क्या हो रहा है।''

'देखो!' राजू उत्सुक सा बोला, 'सिपाहियों ने दरवाजा तोड़ लिया है और वे ऊपर आ रहे हैं।

वे सीढ़ियों की ओर मुड़े, लाल वर्दी वाले सिपाही वाकई सीढ़ी से ऊपर भागे आ रहे थे। वे घंटे वाले कमरे के आगे लगे तीसरे दरवाजे पर पहुंच कर उसे बुरी तरह हिला रहे थे।

'रीजेंट का हुक्म है. दरवाजा खोल दो, तुम सब गिरफ्तार किये जाओगे!''

''फिर हमें गिरफ्तार कर लो''. रुडी ने ढिठाई से उत्तर दिया। ''आओ महिन्दर जब तक यह लोग अन्दर आयें हम घंटा बजाते हैं।''

रुडी और महिन्दर ने रस्सा पकड़ कर खींचना आरम्भ किया और फिर से घंटे का चेतावनी देता स्वर गूंज उठा, ऐसा प्रतीत होता था घंटा तरानिया की जनता को खतरे से निकलने के लिये कार्य करने को कह रहा हो। कुछ ही फुट की दूरी पर सिपाही छैनी हथौड़ों से दरवाजा तोड़ने में लगे हुए थे।

लड़के पांच मिनट तक और प्रिंस पॉल का घंटा बजा तरानिया वासियों को सावधान करते रहे। घंटे के कमरे का दरवाजा एक धड़ाके के साथ नीचे गिरा और सिपाही भीतर घुस आये।

अन्दर आते ही उनका अफसर दहाड़ा' तुम लोगों को इस का फल भुगतना पड़ेगा।

मकड़ी के सुराग

सिपाहियों द्वारा सीढ़ियों से नीचे उतारे जाते समय लड़कों ने बिलकुल विरोध नहीं किया। सीढ़ियों के नीचे बहुत से सिपाहियों ने इन्हें घेरे में ले लिया और चर्च की साइड के दरवाजे से सुरक्षित बाहर निकाल लिया। सड़कों पर आदमी अभी भी थे परन्तु पहले जितने न थे। वे अचम्भित से इन लोगों को घूर रहे थे और सिपाहियों के हटाये जाने पर रास्ते से अलग हो रहे थे।

सिपाही लड़कों को ले ...

ले गये और एक पत्थर की इमारत में पहुंच गये. वहां नीली वर्दी वाले दो अफसरों ने इनका स्वागत किया।

''राज्य के शत्रु! सिपाही अफसर बोला, इन्हें कोठरी में बन्द कर दो, जब तक ड्यूक स्टीफन इनके भाग्य के फैसले का हुक्म न सुनायें।

पुलिस पॉल का घंटा—एक बोला।

''रीजेंट का हुक्म! सिपाही गुर्राया ''चलो''।

पुलिस अफसर घबरा गया और इन्हें एक हाल के रास्ते चार लोहे के सींखचे लगी खाली कोठरियों के पास ले गया। महिन्दर और रुडी को एक में धकेल दिया गया। राजू और श्याम को उसके सामने वाली दूसरी कोठरी में धकेल कर दरवाजे बन्द कर दिये गये। ''इनकी पूरी निगरानी रखना वरना तुम्हें इसकी सजा भुगतनी पड़ेगी।'' सिपाही बोला ''अब हमें महल जा कर रीजेंट को सूचना दे देनी चाहिए।

लड़के अकेले रह गये। रूडी अपनी कोठरी में बने दो बंकों में से एक पर बैठ गया।'' अच्छा, अब इन्होंने हमें पकड़ ही लिया है,'' उसने दुखी स्वर में जोर से कहा। हमने तो पूरी कोशिश की, मालूम नहीं महल में इस समय क्या हो रहा होगा?''

राजू अपने बंक पर बैठ गया,'हम लोग सारी रात जागते रहे हैं सबसे अच्छा यह रहेगा कि जब तक हम प्रतीक्षा करें, आराम ही कर लें। फिर भी घंटा खतरे की चेतावनी के रूप में—''

और आगे वह जो कुछ भी कह रहा था उसकी लम्बी जम्हाई के साथ लुप्त हो गया, उसने अपने आंखें मलीं और फिर उसने देखा श्याम गहरी नींद में सो रहा था। गलियारे के उस ओर महन्दौर और रुडी भी कुछ सुन नहीं रहे थे, वे भी सोरहे थे, परन्तु राजू जब कुछ कहना आरम्भ कर देता था तो उसे पूरा अवश्य करता था। इसलिये वह बोले गया, हालांकि उसकी बात कोई भी सुन नहीं रहा था।

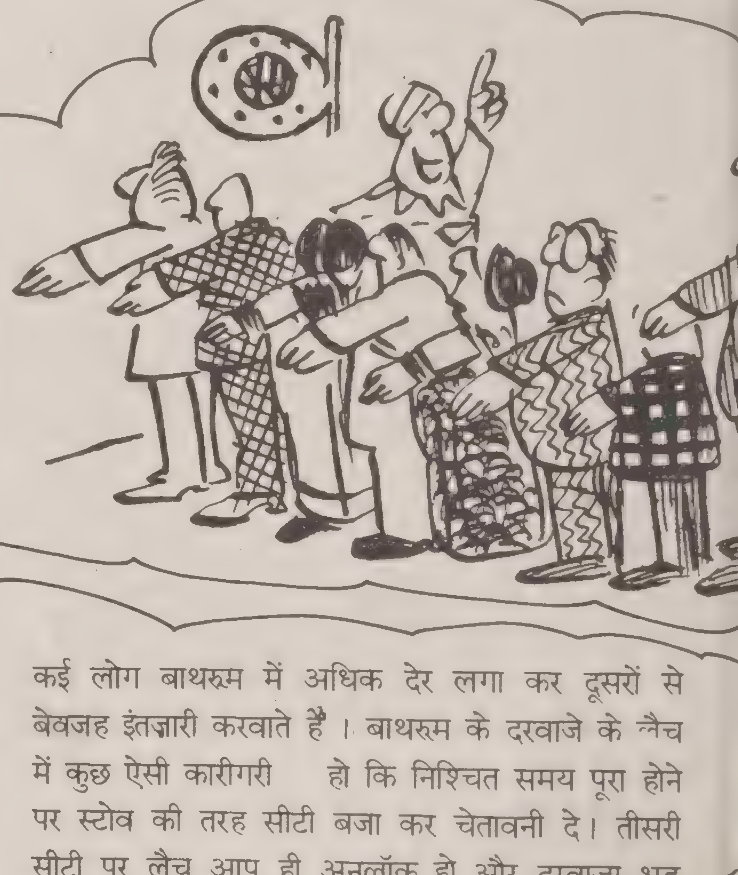
'घंटे से खतरे की चेतावनी सैकड़ों वर्ष से दी जाती आ रही है'' और राजू भी बंक पर लुढ़क गया'' यह रेडियो और दूरदर्शन से कहीं प्राचीन है। सन् १४५३ में कान्सेटनटीपोल में घंटों के प्रयोग पर सख्त निषेध लगा दिया गया था, वहां की सरकार को डर था कहीं लोग घंटों का स्वर सुन विद्रोह न कर उठें—और—''

इस बार वह भी अपनी बात पूरी किये

बिना ही सो गया था।

इंतजारी के फिलर

आपने देखा होगा कि रेडियो पर ए
कार्यक्रम समाप्त होता है और दूस
कार्यक्रम शुरू होने के बीच समय रहता
तो उसमें कोई फिलर धुन बजाई जाती है
इसे फिलर कहते हैं। जिन्दगी के दूसरे क्षेत्र
में भी इंतजारी के समय होते ही फिलरों
का उपयोग किया जाय तो जिन्दगी आसा
हो जायेगी। ऐसे फिलरों की कुछ कल्प-
नायें—



होमगार्ड वाले अपने इंस्ट्रक्टरों की ड्यूटी बस स्टापों पर लगायें। बस की लाइन से परेड और एक्सरसाइज करवायें। जिस-जिस की बस आती जाये वह चढ़ता जाये, बाकी मिलीट्री ट्रेनिंग प्राप्त करें। लोगों को यह मलाल नहीं होगा कि समय व्यर्थ गया।



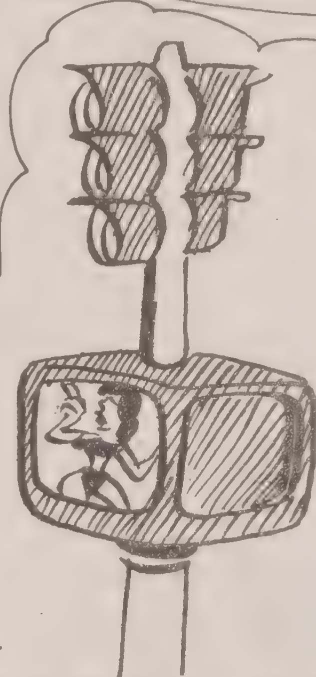
कई लोग बाथरुम में अधिक देर लगा कर दूसरों से बेवजह इंतज़ारी करवाते हैं। बाथरुम के दरवाजे के लैच में कुछ ऐसी कारीगरी हो कि निश्चित समय पूरा होने पर स्टोव की तरह सीटी बजा कर चेतावनी दे। तीसरी सीटी पर लैच आप ही अनलॉक हो और दरवाजा भड़ से खुल जाये



दूध के लिये भी लाइन में खड़े होकर अपनी बारी की प्रतीक्षा करनी पड़ती है। दूध के टोकन ऐसे बनें कि उनमें एक ओर भविष्य छपा हो। लोग सुबह-सुबह अपना भविष्य पढ़ उस पर सोच विचार करने में इंतजारी की कोफ्त से बचेंगे।



कभी खाने की मेज पर खाने की इंतजारी करनी पड़ती है। इसके लिये ऐसा किया जा सकता है कि स्टील की थालियों में उल्टी ओर रिकार्ड हो, थाली के ठीक बीच छोटा सा गड्ढा हो। नमकदानी पर उल्टी थाली घुमा दो और कांटे से रिकार्ड बजाओ।





रोड क्रॉसिंग्स पर भी बत्ती लाल होने की प्रतीक्षा करनी पड़ती है। रोड रैडलाइट पर आटोमैटिक वीडियो सैट लगाये जायें। जिस ओर की बत्ती लाल हो जाये उधर का वीडियो ऑन हो जाये और वीडियो पर कोई मनोरंजक दृश्य आये।



नल भी पानी के लिये इंतजारी कराता है। नल की ऊपरी घुंडी में विविध भारती से ट्यून किया हुआ मिनी रिसीवर सैट फिट हो। पानी के आते ही सैट आटोमैटिक ढंग से बंद हो जाये। जब तक पानी का इंतजार है, रसीले गानों का मजा लें।



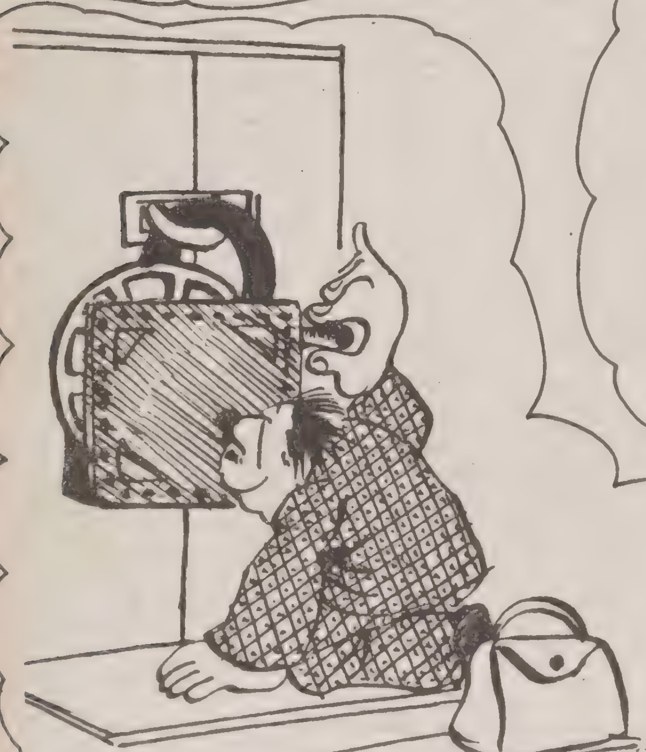
लिफ्ट के लिये भी वेट करना ही पड़ता है। लिफ्ट के साथ वाली दीवार पर एक ब्लैक बोर्ड लगे जिस पर शेर का अधूरा मिसरा लिखा हो, लोग लिफ्ट की वेट करते करते मिसरा पूरा करने में अपना कीमती समय लगायें।

कई भाई वेटरों की इंतजारी में टेबल पर रखे प्लेट को चम्मच से बजाने लगते हैं। होटलों के टेबलों में कुछ ऐसी डिजायनिंग की जाये कि कुर्सी के सामने टेबल टॉप उठाने पर नीचे संतूर की तरह तारें लगी मिलें। चम्मच पकड़ो और आराम से संतूर पर भीम पलासी बजाओ।



टेलीफोन के लिये भी इंतजारी करनी पड़ती है जब कोई दूसरा इससे चिपका होता है। टेलीफोन रिसीवर ऐसे बनें जिन्हें क्रैडल पर से उठाने पर वह गर्म होने लगें और तीन मिनट होते-होते इतने गर्म हो जायें कि हाथ में पकड़े रहना असंभव हो जाये। कोई फोन पर बेकार की गपशप कर बिल नहीं बढ़ायेगा।





घर पर ताला लगा मिले और घर वाले कहीं बाहर गये हों तो बड़ी परेशानी होती है। ऐसे मौकों के लिये ऐसे ताले बनें जिनके छेद से अन्दर झांकने पर व्यू मास्टर की तरह दृश्य दिखाई दे। एक डिस्क में बारह दृश्य होते हैं जिन्हें देखते समय आराम से कटेगा।

राशन की लाइन की इंतजारी तो सभी जानते हैं। राशन कार्ड के पीछे वर्ग पहेली छपी हो! लोग लाइन में खड़े-खड़े अपने कार्ड की वर्ग पहेलियां हल करें। तेल चीनी के साथ राशन में ही कार्ड पर नयी वर्ग पहेली (अगली बार के लिये) चिपका दी जाये।



पृष्ठ ७ से आगे

गई. मगर लाला निश्चिंत खड़ा था.

एक चश्मे वाले क्लर्क, जो वर्मा जी या शर्मा जी थे, ने कहा, ''क्यों साहब, क्या माजरा है?'' मैं ने पैतरा बदला, ''देखिए शर्मा जी, यह बदमाश मुझे पांच रुपये की रिश्वत देना चाह रहा था.''

सुनकर लाला जी फिक् से यों हंसे, मानो इससे बड़ा मजाक उन्होंने सुना ही न हो. उन्होंने शर्मा के कंधे पर हाथ मारते हुए कहा, ''भाया शर्मा, तू ही समझा दे न इसे, कि यहां किस काम की कितनी रेट है.'' फिर वे मेरी तरफ मुड़े, ''देख भाया, नाटक छोड़ दे. मैं बड़े इंजीनियर साहब से लेकर चपरासी तक को पैसे भर चुका हूं. जिसकी जो रेट थी, दे दी. शर्मा से पूछ ले, इसे भी पांच का पत्ता दिया था. अब तू लेता हो तो ले ले, वरना छोले बेच!''

अब सबने मुझे समझाया कि वाकई साईन करने की रेट पांच रुपये थी. मुझ पर भारी वज्रपात हुआ. मेरे दिमाग से कार, बंगले सब एक तरफ हो गए. लाला पांच का नोट टेबिल पर फैंक कर चला गया.

तभी कॉफी का बिल ले आया—छह रुपये का! उसने पांच का नोट टेबिल से उठाया, और एक रुपया मुझे जेब से देना पड़ा. साथियों के ठहाकों में मेरा मुंह देखने योग्य था.

शर्मा मुझ पर तरस खाते हुए बोला, ''यार दिल छोटा न कर, और भी केस आएंगे! हां आगे से इस तरह कॉफी-वाफी में पैसा मत लुटाना.''

मैं ने कहा, ''यह चक्कर क्या है! मैं ने तो सुना था कि इस विभाग में बंगले गाड़ियों की भरमार है. तुमने तो अब तक ज़रूर बंगला बनवा लिया होगा, और कार वार भी ले ली होगी.''

सुनकर शर्मा ने ठण्डी सांस भरी, ''भाई-जान, दिमाग खराब है क्या? कार बंगले होते ज़रूर हैं, मगर ऊपर वालों के. सारा पैसा मिलकर इंजीनियर और ओवरसियर डकार जाते हैं. क्लर्कों के हिस्से में कभी पांच-पांच रुपये आते हैं, कभी दस. अब सुरेश को देख लो, उसने तीन महीने से मकान का किराया नहीं दिया. मोहन पर पांच हजार का कर्जा चढ़ा हुआ है. मुझे नए जूते खरीदे हुऐ सिर्फ तीन महीने हुए हैं, मगर सरकारी बसों में सफर करने से तली में छेद हो गए हैं. मियां, कार के सपने देखना छोड़ दो, साईकिल का पंचर निकलवाने की बात करो. होश की दवा करो.''

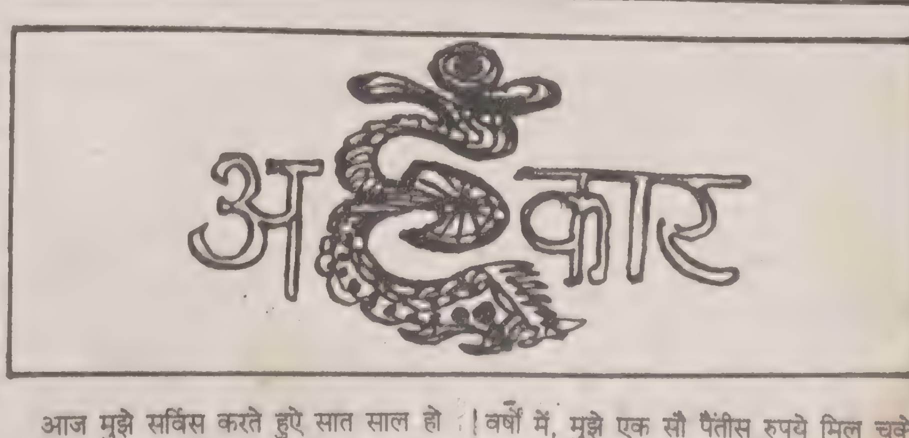
शर्मा जी ने मुझे वाकई सदमा पहुंचाया था. मेरे सारे सपने धूल में मिला दिए थे. अब जाकर मेरी समझ में आया कि अब्बा ने जिंदगी भर रिश्वत क्यों नहीं ली.

आज मुझे सर्विस करते हुऐ सात साल हो चुके हैं. अम्मी आज भी डबलरोटी मक्खन को पूछ रही हैं. मैं उन्हें टाले जा रहा हूं. पर मेरी आस नहीं टूटी है. मैं मजबूत इरादे का आदमी हूं. अब तक घूंस के तौर पर सात वर्षों में, मुझे एक सौ पैंतीस रुपये मिल चुके हैं, जिन्हें मैं कार खरीदने के लिऐ अलग से जोड़ रहा हूं. इसके बाद बंगला! फिर टी. वी. . . .फ्रिज . . .कूलर! . . .आह!

खेल खेल में

१ दिसम्बर १९८१ को भारत इंगलैड के बीच खेले गये बम्बई टैस्ट में ईयान बॉथम ने जब टैस्ट जीवन के २००० रनों की संख्या को छुआ तो वे विश्व में टैस्ट इतिहास के तीसरे खिलाड़ी बने जिन्होंने २०० बिकेटों और २००० रनों का दोहरा कमाल कर दिखाया! पहले यह श्रेय केवल सर गैरी सोबर्स व रिची बेनों को प्राप्त था. कुछ रोचक विवरण.

		टेस्ट	रन	विकेटें
२००० रन व २०० विकेटें				
ईयान बॉथम	इं.	४२	२११३	२११
रिची बेनो	आॅ.	६३	२२०१	२४८
गैरी सोबर्स	वे. इ.	९३	८०३२	२३५
२००० रन व १०० विकेटें				
वीनू मांकड़	भा.	४४	२१०९	१६२
कीथ मिलर	आ.	५५	२९५८	१७०
ट्रेवर गोडार्ड	द. अ.	४१	२५१६	१२३
टोनीग्रेग	इंग.	५८	३५९९	१४१
विल्फ्रेडरोडस	इंग.	५८	२३२५	१२७
ट्रेवर बेली	इंग	६१	२२९०	१३२
१००० रन व १०० विकेटें				
कपिल देव	भा.	३३	१२३४	१३१
मांटीनोबल	आ.	४२	१९९७	१२१
रिचर्ड हैडली	न्यू.	३२	११२०	१४५
जार्ज ग्रिफेन	आ.	३१	१२३८	१०३
इमरानरखान	पा	३५	१२२१	१३९
मॉरिस टेट	इंग.	३९	११९८	१५५
एलेन डेविडसन	आ.	४४	१३२८	१८६
फ्रैड टिटमस	इंग.	५३	१४४९	१५३
इंतखाब आलम	पा.	४७	१४९३	१२५
ईयन जाहन्सन	आ.	४५	१०००	१०९
रे इलिंगवर्थ	इंग.	६१	१८३६	१२२



क्यों और कैसे

प्र. क्या तितलियां सूंघ सकती है ?

उ. हमें जानकर हैरानी तो होगी परन्तु तितलियों देखने, सुनने और स्वाद की प्रखर इन्द्रियां रखती हैं। अधिकतर तितलियों में स्वाद इन्द्रियाँ मुंह के भीतर होती हैं परन्तु सूंघने के शारीरिक अंग तितलियों की मूंछ या ऐन्टीने में होते हैं कुछ तितलियां ऐसी भी होती हैं. जिनके पैरों में नाक होती है। जिससे वे सूंघती हैं

बहुत सी तितलियों में ऐसी खुशबू या बदबू होती है जिसे वे दो प्रकार से प्रयोग करती हैं, एक प्रकार की गंध से दूसरे लिंग की तितलियों को अपनी ओर आकर्षित करती हैं तो दूसरी प्रकार की गंध शरीर से छोड़ कर शत्रुओं को दूर भगाने का काम लेती हैं.

नर तितलियों की गंध पैरों में लगे त्वचा के बलों से निकलती है. आकर्षित करने के दौरान नर तितली मादा पर अपनी खुशबु भरी स्केलस बखेर देती है नर तितलियों की अधिकतर गंध फूलों, मसालों या अच्छे मनुष्यों जैसी होती है.

मादा तितलियां अपनी गंध अपने शरीर के भीतर की कुछ ग्रन्थियों से उत्पन्न करती हैं. अधिकतर यह गंध मनुष्यों को भाती नहीं है. क्या आप मान सकते हैं कि कई तरीकों से तितली की स्वाद इन्द्रियां मानव स्वाद इन्द्रियों में भी अधिक तीक्षण होती हैं तितलियों का मुख्य भोजन फूलों का रस होता है जो घुली चीनी होता है और यही कारण है तितलियाँ मीठे स्वाद को मानवों से भी अधिक शीघ्र अनुभव कर लेती हैं तितली को जब फूल में रस का पता चल जाता है तो वह तुरन्त ही अपनी लम्बी खोखली जीभ को खोल कर रस पी लेती है.

तितलियां फूलों के भिन्न रंगों को भी देख लेती है मनुष्य की तुलना में वे ऐसे अल्ट्रा वायलेट रंग भी देख लेती हैं जो मनुष्यों को अपनी आंख से दिखाई नहीं दे पाते हैं.

प्र. रत्नों का संसार में कब पता चला था ?

उ. अभी तक किसी को भी मालूम नहीं कि वास्तव में रत्न कब खोजे गये थे परन्तु प्राचीन काल से ही मनुष्य इनकी ओर आकर्षित होता रहा है. हजारों वर्ष तक मनुष्य रत्नों को जादुई प्रभाव के लिये पहनता रहा है. ऐसा विश्वास था कि रत्न पहिनने से रोग तथा बुरी आत्माओं के प्रभाव से बचा जा सकता है. आज लोग इस मान्यता पर विश्वास करते है कि रत्नों में यह शक्ति है.

सब से पहला रत्नों के विषय का लिखित रिकार्ड बाईबल में मिलता है इसके २८ वें अध्याय में उच्च पादरी आरों द्वारा ब्रेस्ट प्लेट के पहने जाने का उल्लेख है. इस ब्रेस्ट प्लेट पर बारह रत्न जड़े हुए थे.

प्राचीन मिस्री रत्नों को आभूषणों तथा ताबीजों में जड़ते थे वे रत्नों पर खुदाई करने में बहुत ही माहिर थे और अभी भी उनके द्वारा रत्नों पर लिखित लेख मिलते हैं. मिस्र के लोग अजीब से ताबीज पहिनते थे जिन्हें वे स्कारब कहते थे. यह स्कारब मिस्र में बने रत्न होते हैं जिन पर मिस्र के पवित्र बीटल की आकृति खुदी होती है। ऐसा समझा जाता था कि स्कारब पहिनने वाले का जीवन सुखी तथा आनन्दमय होता था.

प्राचीन काल में भिन्न-भिन्न रत्नों को उनके रंगों से ही पहिचाना जाता था, लाल रंग लिये हर रत्न को 'मानक' कहा जाता था और सभी हरे रंग के रत्न पन्ने कहलाते थे तथा नीला रंग लिये रत्न नीलम के नाम से जाने जाते थे.

बाद में पता चला कि कुछ रत्न दूसरों से अधिक सख्त होते हैं और अधिक मजबूत होते हैं और इस कारण अब रत्नों की कीमत केवल रंग पर निर्भर न हो कर उसकी मजबूती खूबसूरती और उसकी कम मिलने पर भी निर्भर है. उदाहरण के लिये आजकल हीरे सब से अधिक मूल्यवान समझे जाते हैं क्योंकि सुन्दरता के अलावा यह रत्न सबसे अधिक सख्त भी होते हैं

सभी रत्नों को मूल्यवान पत्थर कहा जाता है परन्तु वास्तव में मूल्यवान विशेषकर चार —हीरे, मानक, पन्ने नीलम को ही सब से मूल्यवान पत्थरों में जाना जाता है.

प्र० : हिम (बर्फ) सफेद क्यों होती है ? **सुरजीत सिंह—फरीदाबाद**

उ० : हिम वास्तव में जमा हुआ पानी होती है और जैसा कि हम जानते हैं बर्फ का कोई रंग नहीं होता। फिर हिम का रंग सफेद क्यों होता है ?

इसका उत्तर है कि हर हिमलव बहुत से बर्फ के क्रिस्टलों से बना होता है। इन क्रिस्टलस की कई सतह होती हैं तथा इन सतहों से प्रकाश का परीवर्तन हिम को सफेद बनाता है।

वातावरण में पानी के जमने से हिम बनती है, जैसे ही भाप जमती है, साफ पारदर्शी क्रिस्टल बन जाते हैं। वायुमंडल में हवा के बहाव इन क्रिस्टलों को कभी ऊपर और कभी नीचे ले जाते हैं। ऊपर नीचे जाने के इस क्रम में क्रिस्टल बादलों से नन्हें कण और एकत्रित कर लेते हैं। और धीरे-धीरे जब क्रिस्टल काफी बड़े हो जाते हैं तो ये धीरे-धीरे हिमलव के रूप में पृथ्वी पर आ गिरते हैं।

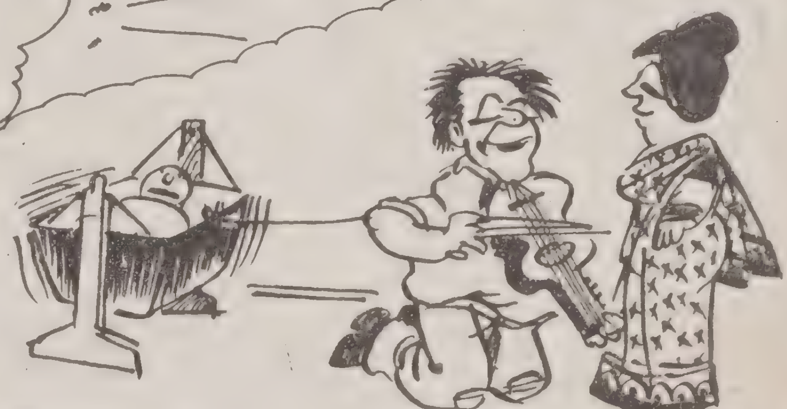
हिमलव बनाने वाले क्रिस्टल सदा ही एक विशेष रूप से जुड़े होते हैं। ये या तो छः कोने का सितारे या फिर छः कोनी तशतरी जैसे होते हैं। इस छः कोने के सितारे का हर कोना बिलकुल दूसरे कोने जैसा होता है। जब कि हिमलव के हर कोने एकसे होते है कोई भी दो हिमलव कभी समान नहीं पाये गये हैं। बर्फ हिम को सदा सफेद ही सोच सकते हैं। परन्तु ऐसे अवसर भी हुए हैं जब रंगीन बर्फ पड़ी है। इसका एक प्रसिद्ध केस चार्ल्स डारविन द्वारा रिपोर्ट किया गया था एक बार जब कि वे किसी अभियान पर गये थे तो उन्होंने देखा कि बर्फ पर चलने वाले खच्चरों के पैर लाल हो रहे हैं।



क्यों और कैसे ?
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

एक पंथ दो काज

लोग संगीतज्ञों को बेकार का आदमी समझते हैं। यदि थोड़ी सी सूझबूझ से काम लिया जाये तो संगीतज्ञ बड़े काम के आदमी साबित हो सकते हैं। संगीत का संगीत और काम का काम अर्थात एक पंथ दो काज—



वायलिन वादक बांह में धागा बांध दूसरा सिरा बच्चे के झूलने से बांधें। बीबी को वायलिन पर राग अहीर भैरव सुनायें। आगे पीछे जाती बांह मुन्ने को झुलायेगी।



कोई भी एल. पी. रिकार्ड बजाइये, बीच में चिकनी मिट्टी रखने पर मिट्टी के बर्तन बनाये जा सकते हैं क्योंकि घूमता रिकार्ड कुम्हार के चाक का काम करेगा।



शहनाई पर राग देशकार बज रहा है और शहनाई वादक का बच्चा शहनाई के मुंह पर साबुन का झाग रख बब्बल उड़ाने का मज़ा ले रहा है।



तबला वादक तबले पर दनादन राग भीम पलासी बजायें, बीवी पास में बैठ कर तबले पर आटे की लोईयां रखती जाये। दनादन चपातियां या पापड़ बनते जायेंगे।



जलतरंग वादक हस्पतालों में जलतरंग बजायें। कटोरियों में नर्स वह दवायें डाले जिन्हें मरीज को खूब हिला कर देना है। इधर राग दुर्गा खत्म हुआ उधर दवाई खूब हिल कर मरीजों को देने के लिये तैयार।


सिलबिल पिलपिल
जूडो कराटे
अरे तू हमें मरवायेगा। जब से जूडो कराते सीख रहा है हमारी नाक में दम कर रखा है। जिस तरह और लोग आराम से कराते सीखते हैं उस तरियों तू नहीं सीख सकता? पड़ौस के बन्ता सिंह ने अपने मकान की मरम्मत के लिए जो ईंटें ला रखी थीं वह जा कर तू सारी तोड़ आया?
घर में जितनी कुर्सियां थीं उनकी टांगें कराते चाप मार-मार कर तोड दीं।
मैं क्या करूं? जब से कराते सीखा हूं ईंटें देखते ही मेरी बांहें फड़कने लगती हैं। दिल धुक-धुक करने लगता है। जो हाल मजनू का लैला को देख कर होता था वही हाल मेरा ईंटों को देख कर होता है।
सरदार जी तुसी फिकर ना करो। त्वाडी मैं जिन्नीयां ईंटां भन दित्ती हैं उन्नी मैं ल्या देयांगा, तीन ईंटें ऊपर से ब्याज के भी दूंगा।
चंगा
दुनिया समझती नहीं है। कराते सीखने के बाद कराते चाप आजमाने का मौका न मिलने पर वही हाल होता है जो गृहिणी का नया डिश चखने वाला न मिलने पर होता है या शादी के बाद गौना न होने पर होता है।
चोर भाइयों के लिये खुशखबरी
चौधरी सिलबिल सिंह, चोरों को अपने घर चोरी का निमन्त्रण देते हैं। चोरों को सिर्फ कराते चॉप का प्रसाद मिलेगा। चोरी करने में सफल चोर जो माल ले जायेगा उसकी रपट नहीं की जायेगी चोरों की हौसला अफजाई के लिये पिछवाड़े का दरवाजा और खिड़कियां खुली रखी जायेंगी
अभी तक कोई नजर नहीं आ रहा है, चोर भाई हड़ताल पर तो नहीं गये?
अब तो कोई न कोई चोर आयेगा ही और मुझे अपने जुडो के दाव और कराते चापों को आजमाने का सुनहरा मौका मिलेगा।
याड़ी यह तो तेरे साथ ऐसी ही बुरी हो रही है जैसे काले कुत्ते के साथ होती है। हाथों में कनोडिया ब्रांड सरसों का तेल मल कर तू दस दिन से रातों को जाग-जाग कर चोरों का इंतजार करता रहा पर चोर हैं कि समाजवाद की तरह आने का नाम ही नहीं लेते। आखिर कहां मर गये सारे चोर? चोरों के ईनाम की रकम बढ़ानी पड़ेगी।
चोरों की जुदाई ने मेरे यार सिलबिल का यह हाल कर दिया। जोगन बन कर रात-रात भर लान में विरह के गीत गाता घूमता रहता है।


इब क्या हो गया ? तू अपना सामान वगैरह पैंक क्यों कर रहा है ? दिल छोटा मत कर, कभी-न-कभी चोर आयेगा और तुझे कराते चाप आजमाने का मौका जरूर मिलेगा। क्या गाम जाने का इरादा है ?
अब मै इंडिया में नहीं रहूगा। यहां जूडो और कराते की कोई कद्र नहीं है। कोई आदमी अपनी जिम्मेवारी नहीं समझता यहा तक कि चोर भी अपने काम से दिल चुराने लगे हैं। मैं जापान जा रहा हूं वहीं रहूगा।
TOKYO
PEKING
SEOL
SINGAPORE
जापान जाना कोई कटड़े के लाठी मारना थोड़े ही है। वहां जाने के लिये पासपोर्ट बनावाना पड़ता है। और हवाई जहाज के टिकट वगैरह के लिये काफी पैसा चाहिये।
वह सब इंतजाम हो चुका है। सब काम मैंने गुपचुप फिट कर दिया है। थम को इसलिये नहीं बनाया कि थम दोनों को मेरे काम में टांग अड़ाने की आदत है। मैं ने अपना पासपोर्ट और वीसा बनवा लिया है। और पैसों का प्रबन्ध भी कर लिया है।
मैंने अपने सारे खेत दो साल के लिये बट्टे पर दे दिये हैं। चाचा रामजोन की मार्फत ननकू राम ने नकद पैसे देकर दो साल का ठेका लिया है। पूरे तीस हजार रुपये मिले मुझे।
तीस हजार रुपये। सचमुच ! तूने हमें पहले क्यों नहीं बताया ? नोट गिनने में हम तेरी मदद करते। फटे हुये नोटों को चेपी लगा कर जोड़ते।
अरे ? ? ? इस बागड़ बिल्ली के पास तीस हजार रुपये हैं !
30000 रु.?
बिस्मिल्लाह ख्रां की शहनाई राग भीम पलासी
यहूदी मेनुइन का वायलिन प्री टींऽऽऽ
इसीलिये तो मैं इनको पासपोर्ट और पैसों के बारे में नहीं बताना चाहता था तीस हजार का नाम सुनते ही कैसे इनके पैंतरे बदल गये। बाथरुम में जा कर इनसे पीछा छुड़ाने की तरकीब सोचूंगा।



बा अदब बामुलाहिजा होशियार । फर्जन्द सुल्ताने हिन्द जिल्लेआली सिलबिल् खां वल्द धींगड़ू अहमद गुड़गांव वाले बाथरुम पधार रहे हैं।
?
मुझे कोई-न-कोई तरकीब लड़ा कर इनके जाल से बच निकलना होगा। वर्ना मुझे यह नंगा कर देंगे। मेरे पैसों को दीमक की तरह चाट जायेंगे।
यह सब नाटक बन्द करो। तुम दो क्या सोच रहे हो कि मेरे पैसों पर हाथ साफ करोगे? चिकनी चुपड़ी बातें करके मुझे मूर्ख बनाओगे? मैं इतना सीधा नहीं हूं। तुम्हारी एक नहीं चलने दूंगा।
मूर्ख कौन बनाना चाहता है? हम तो तेरे सेवक हैं। तेरे दो प्यारे-प्यारे चमचे हैं। तन-मन और धन से तेरी सेवा करना चाहते हैं। हमें पैरों में पड़ा रहने दे।
दुनिया बड़ी ज़ालिम है। पास में पैसा हो तो सच्चे दोस्तों की जरूरत पड़ती ही है।
हम तेरे गुण भजन बना कर गाते रहेंगे।
तू जापान जायेगा तो हमें भी साथ ले जाना पड़ेगा। हिन्दुस्तानी की असली पहचान उसके चमचों से होती है। चमचों के बगैर लीडर बगैर घी की खिचड़ी जैसा है। जापान में तू उतरेगा तेरे दोनों तरफ हम दो चमचे होंगे तो जापानी भी मान जायेंगे कि हिन्दुस्तान का ब्लैक बैल्ट सिलबिल आ गया है।
तो यह चक्कर है। इनकी स्कीम मेरे खर्चे पर जापान की सैर करने की है। मैं भी कच्ची गोलियां नहीं खेला हूं। अच्छा हुआ मैंने अपने जाने की तिथि इनको नहीं बताई। रात को चुपके से उठ कर इनको सोता छोड़ चला जाऊंगा जब तक इनकी नींद खुलेगी तब तक पंछी उड़ चुका होगा।
यह काम फशकिलास हो गया। मैं चुपचाप उठा और सामान उठा कर खिसकलिया और दोनों खर्राटे भरते रह गये। तुम डार-डार तो मैं पात-पात। क्या याद करोगे कि किसी से पाला पड़ा था।
शऽऽऽ चुप . . .आवाज न होने पाये
इसके सूटकेस से मैंने अपनी पूंछ इसीलिये बांध रखी थी कि यह खिसकने लगे तो हमें पता लगे। एयरपोर्ट पर जब यह हमें अपने पीछे देखेगा तो क्या हालत होगी इसकी?

मदहोश



हंसना मना है

एक स्वयं सेविका ने गांव में शराब न पीने का प्रचार आरम्भ किया, इसी दौरान एक दिन उसने गांव के एक मजदूर की फिर से शराब पीना आरम्भ कर देने पर भारी मुलामत की। स्वयं सेविका का कहना था उसने मजदूरं का ठेला अपनी आंखों से सारी रात शराब खाने के बाहर खड़ा देखा है. मजदूर ने इसका कुछ भी उत्तर न दिया परन्तु उसी रात अपना ठेला स्वयं सेविका के घर के बाहर खड़ा कर के छोड़ दिया !

●

एक नवविवाहित दम्पति जो कुछ दिन पहले ही अपने नये घर में आकर रहने लगे थे एक सुखद आश्चर्य में एक सुबह उन्हें शहर में लगे सबसे बढ़िया शो के दो टिकट प्राप्त हुए। परन्तु भेजने वाले ने अपना नाम नहीं दिया था और इस कारण वे दिन भर इसी बात को सोचते रहे कि आखिर टिकट भेजे किसने होंगे।

उन्होंने शो का पूरा आनन्द लिया, परन्तु घर वापिसपहुंच कर उन्होंने देखा उनके विवाह में मिले सभी तोफे चुराये जा चुके थे. साथ ही चोर के हाथ का लिखा एक नोट भी मिला, जिसमें लिखा था—"अब तो तुम्हें पता चल गया होगा !."

●

एक स्त्री हैटों की दुकान के भीतर आकर सजावट की खिड़की में रखे एक हैट की ओर इशारा करके बोली, "वह लाल वाला, परों और बैरीज वाला क्या कृपया मेरे लिये उसे बाहर निकाल देंगे."?

"अवश्य श्रीमती जी, हम खुशी से निकाल देंगे." स्त्री ने दुकान के दरवाजे के बाहर जाते हुए कहा "धन्यवाद, यह हैट मुझे बहुत दिन से तंग कर रहा था."

●

सैनिक हस्पताल में एक नर्स दूसरी को चेतावनी देती हुई—"यह ही खतरनाक केस है, यह लगभग स्वस्थ हो चुके हैं."

एक उत्सुक सैनिक जवान ने कंपनी कमांडर से तुरन्त छुट्टी मांगी—मेरी पत्नी के बच्चा होने वाला है। उसकी छुट्टी मंजूर कर ली गई, जब छुट्टी की दरख्वास्त की मंजूरी के बाद कागज निकाले जा चुके और जवान जाने लगा, तो अफसर ने पूछा बच्चा कब होगा।

"मेरे घर पहुंचने के लगभग नौ माह बाद श्रीमान", जवान ने उत्तर दिया !

●

घरेलू नुक्ते

घरेलू इस्त्री (Iron) पर लगे जले भूरे दाग छुड़ाने के लिये इस पर सिरके में नमक डाल कर गरम करो और दाग पर रगड़ो, दाग साफ हो जायेगा।

इस्त्री को बाहर से चमकाने के लिये चाँदी की पॉलिश या टूथपेस्ट से रगड़ो।

आभूषण साफ करने के लिये बारीक कपड़े पर टूथपेस्ट लगा कर उससे साफ करें।

अपने टेलीफोन को नया रूप देने के लिये सफ़ाई करने वाले अलकोहोल से साफ़ करें।

दूध उबालने से पहले यदि बरतन को अच्छी तरह धो लें और थोड़ा सा पानी बर्तन में रहने दें और फिर दूध डाल कर उबालें, तो दूध कभी बर्तन की तली पर नहीं लगेगा।

अगर दूध की खीर बनानी हो और दूध कम होने के कारण अच्छा गाढ़ा न हो सके तो उसमें थोड़ा सा खसखस पीस कर मिला दीजिये, दूध गाढ़ा भी हो जायेगा और खीर भी अधिक स्वादिष्ट हो जायेगी। ●

पृष्ठ १७ से आगे

श्याम डैन्जो के नीचे बहने वाले बरसाती नाले के पानी में बहा जा रहा था किनारों से अटकता, टकराता बहा जा रहा था, जब कि दूर से राजू उसे आवाज़ दे रहा था, 'श्याम श्याम!'' श्याम खड़े होने का प्रयास कर रहा था ठीक इसी समय किसी ने, उसकी बांह थाम ली और राजू उसके कान में बोला, ''श्याम जागो, जागो श्याम!'' श्याम ने सोयी-सोयी आंखें मिचमिचाईं और जम्हाई ली, बड़ी ही मुश्किल से वह उठ कर बैठा, कुछ-कुछ सोया सा राजू उसे देख कर मुस्करा रहा था।

'श्याम हम से कोई मिलने आया है, देखो कौन है?'' राजू एक तरफ हटा और श्याम ने वीरिशनाथ को अपनी ओर देख कर मुस्कराते पाया।

''अच्छा काम किया, श्याम,'' वीरिश नाथ आगे बढ़ कर श्याम का हाथ पकड़ते हुए बोला 'तुम सब ने कमाल कर दिया!'' हमें तो चिन्ता ने घेर लिया था जब तुम लोगों ने सम्पर्क बन्द कर दिया। परन्तु ऐसा लगता है तुम लोगों ने हमारी सहायता के बिना अधिक सावधानी से कार्य किया, हम ऐसा नहीं सोच सकते थे''।

श्याम ने उनकी ओर देखते हुए पूछा ''प्रिंस जोरो क्या वे सुरक्षित हैं?''

'इससे अधिक सुरक्षित नहीं हो सकते थे, वे अब इधर आने ही वाले हैं'' वीरिशनाथ ने बतालाया 'ड्यूक स्टीफन, प्रधानमन्त्री और उनकी तनख्वाह पाने वाले सारे सिपाही गिरफ्तार कर लिये गये हैं रुडी के पिता अभी कारावास से मुक्त हुए हैं और उन्हें फिर से प्रधानमंत्री पद सौंप दिया गया है। परन्तु मुझे विश्वास है तुम सब यह जानने को उत्सुक हो कि प्रिंस पाल का घंटा बजाये जाने के बाद क्या हुआ?''

रुडी और महिन्दर भी इसी कोठरी में घुस आये, पहरेदार बाहर खड़े मुस्कुराते रहे। महल का कोई भी पहरेदार कहीं दिखाई नहीं दे रहा था।

वीरिशनाथ ने घटना को जितना छोटा हो सकता था कर बतलाया, उस सुबह अब तक दोपहर हो चुकी थी, वीरिशनाथ तथा भारतीय राजदूत महल में लड़कों का पता लगाने गये थे। उस समय महल के दरवाजा पर ताले लगाये जा चुके थे और महल के पहरेदारों ने इन्हें महल में घुसने नहीं दिया

अभी यह लोग पहरेदारों से बातचीत और जिरह ही कर रहे थे कि अचानक प्रिंस पाल का प्राचीन घंटा बज उठा। घंटे की पहली आवाज से सब लोग अचम्भे में पड़ कर बातचीत करना भूल गये। फिर जैसे-जैसे घंटे का स्वर लगातार सुनाई देता रहा, शहर के लोग महल के बाहर सड़कों पर एकत्रित हो गये। भीड़ जब तक बढ़ती रही जब तक कि महल के सामने वाले खुले मैदान में तिल रखने की जगह भी न रही। भीड़ ने प्रिंस जोरो के लिये चिल्लाना आरम्भ कर दिया। भीड़ को तितर-बितर करना महल के पहरेदारों के बस के बाहर था, फिर अचानक एक व्यक्ति महल के दरवाजे के एक ऊंचे खम्भे पर चढ़ गया और लोगों से कहने लगा, 'हो सकता है प्रिंस जोरो खतरे में हो इस समय प्रिंस पाल के घंटे का कोई और मतलब नहीं हो सकता हमें आगे बढ़ प्रिंस जोरो की सहायता कर उन्हें बचाना चाहिये।

फिर मैं भी आगे बढा, मैं तरानिया की भाषा कुछ कुछ बोल लेता हूं, इसलिये मैं भी जोर-जोर से चिल्लाने लगा, ''प्रिंस जोरो को बचाओ, ड्यूक स्टीफन मुर्दाबाद!'' अब तक भीड़ बहुत उत्तेजित हो चुकी थी और भीड़ ने आगे बढ़ महल के दरवाजे में एक ऐसा धक्का लगाया कि वह एकदम चरमरा कर टूट गया। इसी बीच मैने ऊपर चढ़ कर बोलने वाले व्यक्ति से बात की उसने अपना परिचय मिन्सट्रल बताया।

हम महल में भीड़ के साथ घुस गये, भीड़ ने पहरेदारों को माचिस की तीलियों के समान एक ओर फेंक दिया। मेरा साथी लोन्जो—''

'वह तो मेरा भाई है,'' रुडी बोला ''अच्छा तो वह भी निकल भागा

'हां! और उसे प्रिंस जोरो के निवास के कमरों के रास्ते भी पता थे! और जब हम भीड़ को लेकर उधर की ओर बढ़े और पहरेदारों को स्थिति का ज्ञान हो गया तो वे तुरन्त हम लोगों से मिल गये। उनमें से अधिकतर ने फिर कोई परेशानी खड़ी न की। हमने जोरो को मुक्त कर दिया उसने असली राजकुमार की तरह स्थिति सम्भाल ली। उसने सिपाहियों को ड्यूक स्टीफन और प्रधानमंत्री को गिरफ्तार करने का हुक्म दिया। उन बदमाशों ने छुपने की कोशिश तो की, परन्तु पकड़ लिये गये।

कुछ समय ही में वफादार और बेवफा सिपाही छांट लिये गये, छँटनी में विश्वस्त सिपाहियों ने बहुत सहायता की। प्रिंस जोरो सारे षड्यन्त्र कारियों को एक-एक कर पकड़ लेने के प्रयास में लगे हैं, परन्तु फिर भी वे शीघ्र ही यहां आने वाले हैं। एक और बात यह है कि तुम्हारे देश में प्रिंस जोरो से तुम्हारी कार की भिड़न्त भी षड्यन्त्रकारियों का ही एक प्लान था जिसमें वे प्रिंस जोरो को मारना चाहते थे। इसी समय गलियारे में किसी की आवाज से यह रुक गये।

'राजकुमार! आवाज फिर गूंजी, 'राजकुमार-जिन्दाबाद!'' तभी राजकुमार स्वयं दिखाई दिये वे अत्यन्त कमजोर दिखाई दे रहे थे परन्तु उनकी आखों में एक अदभुत चमक दिखाई दे रही थी। वे कोठरी में घुसे और अन्दर के सब व्यक्ति राजकुमार को रास्ता देने के लिये एक तरफ हो गये।

'मेरे भारतीय मित्र!'' वे बोले और आगे बढ़ कर हर एक को बारी-बारी गले लगाया।'' तुमने देश को बचा लिया, प्रिंस पाल का घंटा बजाना एक उत्तेजक साबित हुआ। तुम्हें इसका ध्यान आया कैसे?''

'राजू ने ही सब कुछ सोचा था, '' रुडी तुरन्त बोल उठा हम सब तो रेडियो, टेलीविजन और समाचार पत्रों से संदेश पहुंचाने के विषय में सोचते ही रह गये हमें इस प्रिंस पाल के घंटे का ध्यान ही नहीं आया।''

राजू ने जोरो से कहा, 'तुम्हींने तो हमें बताया था कि प्रिंस पाल ने १६७५ के क्रांति में सहायता मांगने के लिये इस घंटे का प्रयोग किया था, और उसके बाद यह घंटा केवल राजसी अवसरों पर ही बजाया गया था। परन्तु मैंने सोचा इस समय घंटे को खतरे का संदेश पहुंचाने के लिये बजाना चाहिये।

''आखिरकार यह पुराने घंटे ही उन समयों में लोगों को इकट्ठा करने, किसी बात पर पाबन्दी लगाने या किसी खतरे की चेतावनी देने के काम आते थे। और इसी कारण—

दूसरी बार भी राजू अपनी बात पूरी न कर सका जोरो बीच में ही जोर से हंसा और राजू की पीठ थपथपाई 'तुमने कमाल कर दिया'' वह बोला 'स्वयं प्रिंस पाल भी तुम पर गर्व कर उठते। ड्यूक स्टीफन जेल में पहुंचा दिये गये हैं और मेरी कल्पना से भी भयावह षडयन्त्र नष्ट कर दिया गया है। मैंने प्रिंस पाल के घंटे को विजय चिह्न के रूप में रात तक बजाये जाने का हुक्म दिया है। इसलिये सब ठीक हो गया, हालांकि तरानिया की चांदी की मकड़ी अभी भी खोई हुई है।''

''विजय का घंटा बजेगा,'' राजू बोला फिर कुछ उदासीन सा होगया। ''प्रिंस जोरो, मैने अनुमान लगा लिया है चादी की मकड़ी कहां मिलेगी, परन्तु उसे ढूंढ़ने हमें महल में जाना पड़ेगा।''

पन्द्रह मिनट बाद यह सब प्रिंस जोरो की

कार में बैठे अभिवादन करती भीड़ों से होते हुए महल की ओर चले। प्रिंस जोरो भीड़ में धीरे-धीरे आगे बढ़ती गाड़ी में बैठे, सिर झुका कर और हाथ उठा कर निरन्तर अभिवादन का उत्तर देते जा रहे थे। फिर भी कुछ समय बाद यह लोग महल के अन्दर इन लड़कों को मिले सोने के कमरे में पहुंचे। राजू, महिन्दर, श्याम और प्रिंस जोरो भीतर थे

''अब देखते हैं, मेरा अनुमान कहां तक सही है, कमरे की हर एक दूसरी चीज़ की छानबीन कर ली गई है। केवल एक ही जगह ऐसी है जहां मकड़ी हो सकती है, हो सकता है मेरा निष्कर्ष गलत हो, परन्तु—''

''बात कम काम ज्यादा महिन्दर बोला, लेक्चर देने का समय नहीं है हमें दिखाओ।''

''अच्छा'' राजू मुड़ कर कमरे के कोने में गया और हाथ और घुटनों पर बैठ कर धीरे-धीरे मकड़ी के पलंग और दिवार पर बने पुराने जाले की ओर बढ़ा।

एक बड़ी काली और सुनहरी मकड़ी उसे देख कर जल्दी से दूसरी ओर जा कर फ़र्श पर लगी लकड़ी और फर्श के बीच के हिस्से में घुस गई। एक और काली और सुनहरी मकड़ी राजू को दरार से अपनी चमकदार आंखों से देख रही थी।

राजू ने अपना हाथ ध्यान से आगे बढ़ाया, उसने हाथ जाले के नीचे घुसाया, जाले को सावधानी से टूटने से बचाते हुए वह हाथ को दूसरी मकड़ी के करीब ले गया। सब देखने वालों का ख्याल था मकड़ी तुरन्त भाग कर छुप जायेगी, परन्तु वह भागी नहीं। राजू ने उसे अपनी उंगली के सीरे से पकड़ कर दरार से बाहर निकाल लिया और धीरे से उसे जाल से बाहर निकाल कर खड़ा हो गया। मकड़ी को अपनी हथेली पर रख कर जोरो के आगे किया।

'देखो''! वह बोला।

''तरानिया की चांदी की मकड़ी !'' प्रिंस जोरो मकड़ी को लेते हुए बोला। 'तुमने इसे ढूंढ़ ही लिया।''

''मैंने आखिर अनुमान लगा ही लिया मकड़ी कहां है राजू बोला।'' सिपाही जब दरवाजे पीट रहे थे और रुडी हमें भाग चलने के लिये कह रहा था, उस समय श्याम को एक अदभुत ख्याल आया!

''क्या वाकई मैंने इसे यहां छिपाया था'' श्याम बोला, 'क्योंकि उसे उस समय की घटना बिलकुल याद न थी। हां ख्याल तो तुम्हारा ही था, केवल सिर बालकनी में दीवा।

टकरा जाने से तुम उस विषय में बिलकुल भूल गये थे। तुमने सोचा था कि एक ही ऐसा स्थान है जहां तरानिया की चांदी की मकड़ी को कोई ढूंढ़ेगा नहीं। और वह स्थान था जाले में बैठी असली मकड़ी के पास। इसलिये तुमने चांदी की मकड़ी को जाले के पीछे दरार में घुसा दिया था। कमरे में खोजते समय हम सबने उसे वहां देखा था, परन्तु उस ओर किसी का भी ध्यान नहीं गया। हालांकि मुझे सोचना चाहिये था कि एक जाले में दो मकड़ी कभी नहीं रहती। ब्रोजास! '' श्याम, कमाल कर दिया, उसकी पीठ थपथपाते हुए जोरो बोला। 'मुझे मालूम था मैं तुम्हारी मित्रता तथा होशियारी पर भरोसा कर सकता हूं।''

राजू ने कहना आरम्भ किया 'मुझे इसका ख्याल तभी आया जब प्रिंस जोरो ने कहा, ''विजय के घंटे बजेंगे, क्योंकि कल रात बूढ़े ऐन्टन ने ड्यूक स्टीफन से कहा था, 'उसे विजय के घंटे बजते सुनाई दे रहे हैं। और वह मकड़ी चाहे चांदी की है पर है तो मकड़ी ही!

मुझे नहीं मालूम बूढ़े ऐन्टन की कितनी शक्ति है, परन्तु उसने जितना बतालाया था उससे कहीं अधिक उसे मालूम था। विजय के बजते घंटे आप के लिये बज रहे हैं और मैंने सोचा यदि, मकड़ी आखिर मकड़ी ही है, तो हमें उसे मामूली मकड़ी के स्थान उसके जाले के निकट ही ढूंढ़ना चाहिये।' राजू का लेक्चर काफी लम्बा था परन्तु इस बार किसी ने उसे रोका नहीं, अपनी बात समाप्त करने के बाद राजू ने लम्बा सांस खींचा।'' और जैसा कि जाहिर ही है, इसमें मेरी कोई बड़ाई नहीं है, असल में—''

'नहीं मैं तुम्हें पूरी बड़ाई का हकदार समझता हूं, '' जोरो बोला। उसने चांदी की मकड़ी को सावधानी से अपने रुमाल में लपेट कर जेब में रख लिया।'' अभी यहां मैं तुम्हारी पूरी तरह सराहना नहीं कर सकता परन्तु जो भी अधिक से अधिक मैं कर सकता हूं मैं अभी यहीं करूंगा।''

उसने अपनी दूसरी जेब से तीन अति सुन्दर चांदी की चेन में डली चांदी की मकड़ियां निकालीं। 'मेहरबानी से एक कतार में खड़े हो जाओ,'' उसने तीन जासूसों से कहा, और उनके कतार बना लेने के बाद तीनों को एक-एक मकड़ी वाली चेन पहना दी। ''अब, तुम तीनों आर्डर आफ दी सिल्वर स्पाईडर के मेम्बर बन गये हो। मेरे देश का सबसे उत्तम सम्मान है जो तरानिया की विशिष्ट सेवा के लिये दिया जाता है। यह केवल तरानिया वासी ही पहन सकते हैं और इस लिये मैं तुम तीनों को तरानिया का आनरेरी देशवासी बनाता हूं। अब बताओ मैं और क्या सेवा कर सकता हूं। कुछ भी जो मैं कर सकता हूं, करने को तैयार हूं''

''अच्छा'' राजू बोला

परन्तु बोलने का काम इस बार महिन्दर ने किया 'क्या हमें कुछ खाने को मिल सकता है?''

कुछ ही दिनों बाद जोरो का राज्याभिषेक होगया, और तुरन्त ही उसने अपने देश की बागडोर सम्भाल ली। ड्यूक स्टीफन तथा उनके षड्यन्त्रकारी साथियों को जेल में डाल दिया गया। साथ ही तरानिया को एक बड़े बदमाशों के अड्डे में बदलने की नीयते रखने वालों को देश से भागते हुए पकड़ कर जेलों में लम्बे समय के लिये बन्द कर दिया गया।

राजू, महिन्दर और श्याम ने बड़ी दिलचस्पी से प्रिंस जोरो का राजतिलक देखा और वे वापिस अपने घर अपने देश चले गये। प्रिंस जोरो ने उन्हें उनकी अपूर्व सहायता के लिये बहुत धन्यवाद दिया और कभी फिर तरानिया आने का निमन्त्रण दिया।

(समाप्त)

संसार में तब और अब

- क्रिस्टोफर कोलम्बस ने नई दुनिया की अपनी प्रथम यात्रा में आजकल अमरीका में एक साधारण नई कार ख़रीदने से कम पैसा ख़र्च किया था।
- राईट ब्रादर्स की सबसे पहली किटी हॉक उड़ान जो उत्तरी केलिफोर्निया अमरीका में हुई थी ३० मीटर की थी जब कि आजकल कुछ वायुयान इससे दुगुने लम्बे हैं।
- सन् १९३० में न्यूयोर्क से सेनफ्रान्सिस्को तीन मिनट फोन से बात करने में ८.७५ डालर खर्च होते थे और इतने ही पैसों में ४३७ फर्स्टक्लास पत्र इतनी दूरी पर भेजे जा सकते थे. आजकल वही दिन की फोनकाल हम १.४० डालर में कर लेते हैं. परन्तु केवल नौ फर्स्ट क्लास चिट्ठियां इतनी दूर भेज सकते हैं.

संसार का सबसे जवान देश—
संसार का सबसे जवान देश ब्राजील है, इस देश के ११६ लाख व्यक्तियों में से आधे तीस वर्ष की आयु से कम के हैं।


फैण्टम-जंगल शहर
डियाना जाने की तैयारी करती है
औषधियां तथा किताबें
दफ्तर के लिये स्थान
FALK & BARRY 5/19
डियाना आज कैसा रहा ?
बहुत काम था, मैं बिलकुल थक गई हूं
© 1980 King Features Syndicate, Inc. World rights reserved
प्रियों ! मैं तुम्हें उन के पास घर पहुंचाने की और प्रतीक्षा नहीं कर सकती।'
डा डा
भा भा
यह मुझे इस प्रकार चाहिए
हमारे लिये यह नया है परन्तु हम बना लेंगे.
?
?
FALK & BARRY 5/20
यहां इन तीन पेड़ों से शुरू करो।
ठीक है
© 1980 King Features Syndicate, Inc. World rights reserved
अंकल वाकर आप क्या कर रहे हो ?
नीचे आ कर बताऊंगा
FALK & BARRY 5/21
यह भारी-से-भारी तूफान का सामना करने लायक मज़बूत होना चाहिए
हम जानते हैं इसे कैसे बनाना है ओ चलते-फिरते भूत।
आपने मुझे यह बताने का, कि आप क्या कर रहे थे, वादा किया था
रेक्स वादा वादा ही होता है
हम संसार का सबसे सुन्दर और बड़ा वृक्ष घर बना रहे हैं.
वाह !
वृक्ष घर बना रहे हो क्या
डियाना और बच्चे यहां रहेंगे.
कुछ समय के लिये
क्या मैं भी कुछ समय के लिये यहां रह सकता हूं ?
बेशक !
वाह ! क्या आश्चर्य की बात है, यह तो बहुत ही महान् है क्या तुमने डियाना को बता दिया है ?
नहीं अभी नहीं डियाना के लिये भी आश्चर्य है ?
rights reserved



चित्र वर्ग पहेली

शब्द बनाइये—नीचे बेतरतीब से दिये अक्षरों को आप ठीक क्रम में रखे तो सार्थक शब्द बनेंगे। उन्हें ठीक क्रम में साथ दिये वर्गों में भरें।

दायीं ओर के चित्र के सवाल का मजेदार जवाब पाने के लिए बांयी ओर भरे वर्गों को नीचे नये क्रम से रखें।

न ा स म र ि ल

ी ल न त ल श ग ा

त ल प भ ी ी

र ा त म स न ा

न ि र य ट भ ा



इनाम 10/- रूपये

सही उत्तर :-

अन्तिम तिथि - 20-2-82

रंग और व्यंग टेलिफोन के संग

लेखक डा० विजय भारद्वाज

टेलीफोन आज ब्रह्म बन गया है। टेलीफोन के मालिक ब्रह्मज्ञानी जैसे सम्मानित हैं टेली-फोन हीन ब्रह्मज्ञान जिज्ञासु की तरह दौड़ लगाते हैं सिफारिशी घोड़े दौड़ाते हैं वर्षों प्रतीक्षा करते हैं। वैसे टेलीफोन बूर का लड्डू है, जो खाये वह भी पछताये, जो न खाये वह भी पछताये। टेलीफोन वाले परेशान हैं, कभी खराब, कभी गलत लम्बे चौड़े बिल। अवांछित व्यक्ति आकर घण्टों खराब कर देते हैं, मौके-बेमौके बजता गलत फोन अधिकांश व्यक्तियों का मूड आफ कर देता है पर श्रीमान 'क' की बात निराली है, बिना मुंह बनाये या झल्लाये रांग नम्बर का उत्तर देते हैं, एक दिन में अनगिनित रुप बदलते हैं।

एक बार 'क' सपरिवार भोजन कर रहे थे। फोन बजा श्रीमती जी ने मुंह बनाया मानो कुनैन मिक्चर पीया हो। दूसरे छोर से जनाना स्वर उभरा अरोरा जी हैं?'' मीठे स्वर में क बोले, 'स्पीकिंग'' बोल रहा हूं।

जनाना स्वर,'देखिये पिक्चर देखने को मन है, तुम्हारी छोटी साली भी आई है। कहां पहुँचूं और कौन सी साड़ी पहनूं?'' गुलाबी शिफान या पीली बम्पर जार्जेट भी ठीक रहेगी, डिलाइट पहुंचो''

क,'' बारह बजे पहुंच जाना, स्कूटर ले लेना

बारह बजे 'क' सपरिवार डिलाइट पहुंचे तो देखा गुलाबी साड़ी में एक युवती तमतमाहट व बेचैनी के रंग बदल रही थी पास ही एक स्कर्ट सज्जिता किशोरी थी.

शाम के आठ बजे थे, सारे दिन घूम कर थके हारे लौटे थे, एक बूट उतार चुके थे, दूसरे को उतार रहे थे तभी फोन घनघनाया। क ने शान्त स्वर में हैलो कहा दूसरे छोर से एक बालक बोला, 'पापा! मैं राजू बोल रहा हूं, आज मम्मी का मूड खाना बनाने का नहीं है, लौटते समय होटल से कटलेट्स और हाटडाग ले आना।'' उत्तर था, रसगुल्ले भी लाऊंगा।

पता नहीं कौन से नेता का स्वर्गवास हुआ था, 'क' चाय पी रहे थे, फोन बजा, क लपके। दूसरी ओर से घबराया स्वर उभरा शिक्षाधिकारी अमुक हैं?



" क,'' कहिए।''

'जी मैं प्रिंसीपल . . .बोल रहा हूं . . .का देवसान हो गया है। स्कूल बन्द कर दें।

क, 'कमाल है, साहब! आप अभी तक स्कूल खोले बैठे हैं क्या हो गया है आप को?

फौरन स्कूल बन्द कर दें।

रात को दस बजे थे, सब बतिया रहे थे, घण्टी बजी. क ने हैलो कहा। दूसरे छोर से 'क्या डा. शर्मा हैं?''

क, 'स्पीकिंग''

''आपकी दवाई से फायदा नहीं हुआ। जुकाम जोरों पर है।''

क, ''अदरक का रस निकाल,शहद मिला कर एक-एक घण्टे में एक-एक चम्मच लें या एक कप गरम जल में आधा नींबू निचोड़लें।

आपकी दवा और मिक्चर का क्या करुं?

क: 'उन्हें फेंक दीजिए।''

'लेकिन आप तो एम.बी. बी. एस, एफ. आर. सी. पी. हैं, आप नीबू अदरक कैसे बता रहे हैं?''

क 'खास मरीजों को खास नुस्खे बताते हैं नींबू वाली चाय नेहरू जी का और अदरक शहद अजमल खां का खास नुस्खा है।''

एक बार पता नहीं किसे फोन कर रहे थे, कई कोशिश की और कनेक्शन मिल गया। दूसरी ओर से महिला का आक्रोश पूर्ण स्वर इनके हैलो को दबा कर उभरा,'' कल अकड़ रहे थे, आज फोन कर रहे हो?''

क,'' मैं . . .मैं

महिला, क्या बकरी की तरह मिमिया रहे हो एक दिन पिक्चर देखने चली गई, तुमने तूफान खड़ा कर दिया पापा बहुत बिगड़ रहे हैं।

उस घर में क्या हुआ होगा, मामला और बिगड़ा होगा, या स्थायी अस्थायी युद्ध विराम हुआ होगा, राम जाने पर 'क' हंसते हंसते दोहरे होरहे थे। एक बार फोन पर एक युवक का झिझकता स्वर उभरा, 'क्या मैं मेजर दास से बात कर सकता हूं.

क, स्पीकिंग

रानी से मैं शादी करना चाहता हूं

क,''आफ कोर्स'' एक बार युवती का स्वर उभरा, 'क्या मि. जैन हैं?''

क, 'स्पीकिंग।''

'सर मैं राधा हूं, छुट्टी तो ड्यू नहीं हैं, क्या मैं एक दिन छुट्टी कर लूं, मेरी तबीयत ठीक नहीं है''

क''आप दो तीन दिन की छुट्टी कीजिए''

एक बार फोन बजा और स्वर उभरा,'' मैं राजा राम एण्ड कम्पनी से बोल रहा हूं, और क्या बिल्डिंग मैटीरियल चाहिए?''

क 'एक ट्रक ईंटें, बीस बोरी रेत, तीस बोरी बजरी व रोड़ी 'लेकिन आपने तो ईंटों के लिए मना किया था?''

क 'अब प्लान बदल गया है, माल फौरन भेजें।

फोन के दूसरे छोर पर क्या बीतती होगी, राम जानें पर क तो इसी बहाने देर तक हंसते हैं और मनोरंजन कर भी नहीं देते।काम सही है या गलत आप निर्णय करें पर 'क' या उनके बन्धु ऐसा करते जरूर हैं चाहे दूसरे व्यक्ति को परेशानी हो!

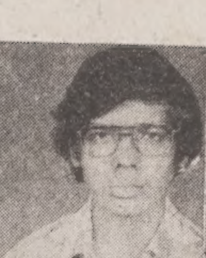

रामकुमार 'परवाना' मो. आशापुरपो. दर्शन नगर, फैजाबाद २२४१३५. २१ वर्ष पत्र मित्रता.


सुरेश पप्पी, सब्जी मंडी, जींद (हरियाणा), २१ वर्ष, फरमाईश, दीवाना पढ़ना, क्रिकेट, डाक टिकट.


एस जब्बर सिंह मस्ताना देहली टेलर्स, फड़ बाजार, बीकानेर (राजस्थान) २१ वर्ष, पत्र मित्रता


राजन चौधरी, ७९-ए, माडल टाउन, करनाल, १४ वर्ष, दीवाना पढ़ना, स्कूटर चलाना.


प्यारा सिंह राजबाग पूर सिनेमा, सुन्दर गढ़, उड़ीसा, १८ वर्ष, जूडो-कराटे.


राजेश कुमार जैन १३४३, रास्ता अजायबघर का किशन-पोल बाजार जयपुर १७ वर्ष


यासीन अलि बुक स्टाल स्टेशन रोड, धनबाद, १७ वर्ष, घूमना, फिल्म देखना.


संजय गर्ग, गज्जोमल एण्ड संस, रावत पारा आगरा-२८२००३ १८वर्ष पत्र मित्रता


लकी उर्फ राजेश कुमार वर्मा रतन गली नं. ८, धर्मपुरा, गांधी नगर, दिल्ली, १७ वर्ष.


ब्रह्मानन्द सरोया WZ २५५ जेल रोड, नांगल राय बाजार, नयी दिल्ली, २० वर्ष.


मोती लाल, मायापुरी, खजान बस्ती, नयी दिल्ली, १८ वर्ष, फोटो खींचना,


गोपाल कुमार गुप्ता, काशीपुर वार्ड नं. १३ जिला. पो. थाना-समस्तीपुर ८४८१०१


गुलशन गेरा 'सनी' हिमाचल टैक्सटाइल्स एस. डी. कालेज. जी. टी. रोड, पानीपत.


जनक कुमार संघवी एस. आर. सी. बी. रोड, फैन्सी बाजार, अशोक भवन, गौहाटी-७८१००१ (आसाम),


श्री राम निराला, जे ८४, खेमा कटरा, किशन गंज, दिल्ली ११०००७, २१वर्ष, पत्र मित्रता.


किशोर चटर्जी, एच-५५ ओ. सी. रोड, साउथ पार्क बिस्टुपुर, जमशेदपुर-८३१००१, २० वर्ष,


मधुकर मोरे २९५ गणेश चौक, आजाद नगर, इन्दौर, १८ वर्ष, पत्र मित्रता करना.


पुष्पराज सचदेव, हकीकत नगर, मकान न. एल २८, बड़ चौक, सहारनपुर, १५ वर्ष,


खुरशीद खान होजाई, नवगांव (असम) १४ वर्ष, क्रिकेट खेलना.


अनिल बजाज ११८/४८२, कौशलपुरी, कानपुर, १६ वर्ष, भ्रमण करना.


राजकुमार सिंह, ८५ विष्णु कालोनी, शाहगंज, आगरा-२, २०. वर्ष.


यशपाल शर्मा, श्री रमेश चन्द शर्मा, नियर तेलू राम दो माल रोड, सोलन, १८ वर्ष.


मोतीलाल लम्बोरिया अग्रवाल, रानी बाजार, बीकानेर-३३४००१, १९ वर्ष,


बाबू लाल जी, रेलवे कालोनी गांधी घंटा, कच्छ, २० वर्ष, किताबें पढ़ना.

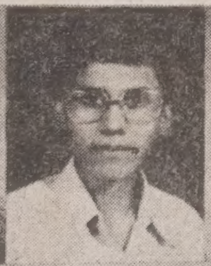

संजय कुमार गुप्ता, डा. एस सी मिश्रा, टिकरापारा, बिलासपुर, १७ वर्ष, दीवाना पढ़ना.


लीलाधर कुमावत (डान) श्यामसदन, कोलीवाड़ा, उदयपुर (राज.), ३१३००१, २० वर्ष


एच. सी. बहल, शिवपुरी लुधियाना-८, २४ वर्ष, फरमाईश भेजना, पत्र मित्रता.


धर्मचद्र जैन, ११७, हजारी बाग, २१ वर्ष, पढ़ना. मित्रता, विदेश घूमना.


प्रदीप कुमार जे. रुपावाला, लामडा चौक, सूरत (गुजरात), २० वर्ष, पत्र मित्रता, वाचन.


सिद्धार्थ वैद्य राय, डी ३०/२३ देवनाथ पुरा, बंगाली टोला वाराणसी (यू. पी.) २२१००१,

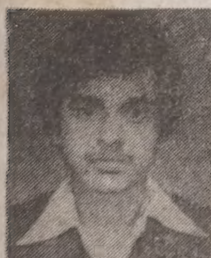

राहुल राव बिजवल, राज पुस्तकालय, शुक्ला चौक, मंदसौर (म. प्र.). १७ वर्ष,


राजकुमार शर्मा, २, कन्नू लाल लेन, बड़तल्ला स्ट्रीट, कलकत्ता-७००००७, १९ वर्ष,


रमेश वासवानी, ३५ किशनगढ़ कोठी, जयपुर रोड, अजमेर (राज.). १९ वर्ष, पत्र-मित्रता

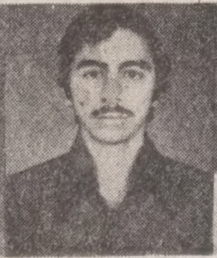

जेठा नन्द, अशोक नावल स्टोर, श्री विजय नगर, १६ वर्ष. पत्र मित्रता.


दलजीत सिंह छाबड़ा, २/९२, गीता कालोनी, दिल्ली, १७ वर्ष, हरफन मौला.


प्रदीप दुबे, शिकोहाबाद, जिला. मैनपुरी (यू. पी), १७ वर्ष, क्रिकेट, बेडमिन्टन खेलना


बलराम ठाकुर, ८/३३२, न्यू रोड, काठमांडो, नेपाल, १३ वर्ष, दीवाना पढ़ना.


कैलाश कुमार यादव, यादव होटल, गंगा सागर, जबलपुर म. प्र., १७ वर्ष, पत्र मित्रता


कुल भूषण मदान, तुराब नगर गाजियाबाद, १९ वर्ष, मौन रहना.


मधुकर एम. एन. चुटे, इंदिरा हाउसिंग सोसायटी, देवपुर ४४, १५ वर्ष, सिनेमा देखना

हमारा पता: दीवाना फ्रैंड्स क्लब ८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-११०००२. कृपया अपना नाम व पता हिन्दी व साफ-साफ लिखें।

नाम ----

पता ----

आयु ---- शौक ----

दीवाना फ्रैंड्स क्लब

दीवाना फ्रैंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रैंडशिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिये जिसे दीवाना तेज साप्ताहिक में प्रकाशित किया जायेगा। फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें।

तेज प्रेस, नया बाजार, दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिए पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित। प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता।

शव गाड़ी में हनीमून

इन्ग्रिड कपूर के जीवन का सबसे खुशी का दिन वह था जब उनका विवाह शवग्रह में हुआ था उनके दूल्हा बिल चियु फिलडेलफिया के शवग्रह इन्चार्ज थे तथा उनका निजी चेपल इस कार्य को करने के लिये बहुत सुविधाजनक साबित हुआ था फ्लोरिडा की ब्यूटी क्वीन मेरियन ब्रुक्स को विवाह के आनन्द के समय दुख का वातावरण घेरे था जब कि उनके विवाह पर आने वाले बहुत से गुलदस्तों पर कालेरिबन बंधे पाये गये तथा उन पर के संदेश भी ''दुखद याद में'' इत्यादि ही थे. बाद में पता चला कि मेरियन के विवाह के गुलदस्तों के आर्डर उसी नाम के एक दुखद टोकनों से मिक्स हो गये थे

हाल ही में सुन्दरी योलीन बारडियन का विवाह एक मृत व्यक्ति से हुआ है जो कि बिलकुल कानून जायज था उनकी तथा उनके मित्र की सगाई मित्र के फ्रैन्च आर्मी से छुट्टी पर आने के समय हुई थी तथा इन दोनों ने 'डाक से विवाह' करने का निश्चय किया था. इनके दूल्हे जैक्वीस गिनीन ने अपने कमॉन्डिग अफ्सर के सामने विवाह की शपथ ली थी फिर उनकी एक सड़क दुर्घटना में मृत्यु हो गई. परन्तु विवाह के कागजात पहले ही फ्रांस पहुंच चुके थे।

काले कपड़े और काला वेल पहने चोलीन ने विवाह की रस्में पूरी कीं और फिर दुल्हन बनते ही वे विधवा मानी गई. इस सब के कारण वे आजीवन विधवा पैन्शन पाने की हकदार हो गई.



असरानी

R.N. 10598/65 Regd. No. D(DN)-275

